मूल्य रू. ५-००

श्री स्वामिनारायण

मासिक

प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महीने की ११ तारीख ○ सलंग अंक १३१ ○ मार्च-२०१८

श्री नरनारायणदेव का १९६ वाँ पाटोत्सव

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.

श्री नरनारायणदेव के १९६ वे पाटोत्सव अवसर पर श्रीहरि के तीन अपर स्वरुप के हाथो अभिषेक तथा अन्नकूट आरती का दर्शन, सभा में कथा करते वक्ता शा. स्वामी निर्गुणदासजी, सभा को आशीर्वचन प्रदान करने वाले प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. आचार्य महाराजश्री, पारायण और पाटोत्सव यजमानोका सन्मान, तथा उसी दिन अपने मंदिर द्वारा अनाथ बच्चो के लिए आंगन की निर्माण विधि का उद्घाटन करते हुए प.पू.श्रीराजा, महंत स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा सम्बोधन तथा इस अवसर पर रक्त दान कैम्प में रक्तदान क रते हुए हरिभक्तगण।

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र
वर्ष - ११ ● अंक : १३१
मार्च-२०१८

अ नु क्र म णि का

०१.	अस्मदीयम्	०४
०२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०५
०३.	राम दुवारे तुम रखवारे	०६
०४.	श्री घनश्याम की जय	०८
०५.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के मुख से आशीर्वाद वचन	१०
०६.	श्री स्वामिनारायण म्यूजियम - इसमें क्या है ?	१२
०७.	श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से	१३
०८.	सत्संग बालवाटिका	१९
०९.	भक्ति सुधा	२१
१०.	सत्संग समाचार	२५

संस्थापक
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ ● फोक्स :
२७४१९५९७
प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए
फोन : २७४९९५९७
www.swaminarayanmuseum.com
दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स : ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणेदव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत स्वामी)

पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फोक्स : २२१७६९९२
www.swaminarayan.info

पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० ● प्रति कोपी ५-००

अस्मदीयम्

बड़े लोगो के द्वारा बनाई गई मर्यादा का उल्लंधन करके कोई सुखी नही होता है। इसलिए जो त्यागी है उन्हे त्यागकर धर्मानुसार व्यवहार और जो गृहस्थ हरिभक्त है उन्हे गृहस्थ धर्मानुसार व्यवहार जितनी स्त्रीयों हरिभक्त है उन्हे स्त्री धर्म के आधार पर व्यवहार करना चाहिए। यदि वे जानकर कम व्यवहार करे तो भी सुख नही यदि अधिक रे तो भी सुख नही। इसलिए परमेश्वर के कथनानुसार धर्म ग्रन्थ में जो लिखा है उसके हिसा बसे अधिक और कम करने पर अवश्य दु:खी होते है। इसलिए सत्पुरुषो की आज्ञानुसार जो रहता है लम्बे समय तक भोग करता है। (ग.म.प्र. ५१)

सर्वोपरी सर्वावतारी ईष्टदेव श्री स्वामिनारायण भगवानने उपरोक्त वचनामृत में् च्चीबात कहे है। हमे हमेशा उस पर ध्यान देना चाहिए। इसके आधार पर हम व्यवहार करेगे तो रंच मात्र दु:ख नहीं आयेगा। यदि इससे बाहर होते है तो दु:ख और दु:खी है। साधु को साधु के धर्मानुसार व्यवहार करना चाहिए। महाराज ने जैसा कहा है आज्ञा किये है वैसे व्यवहार करना चाहिए।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ हाथो से बीते ३ महीने में कई हरिमंदिर और शिखरबद्ध मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा, शिलान्यास विधिसम्पन्न हुई है। सम्प्रदाय में कई नये गांवो में हरि मंदिर तथा अनेक नये मुमुक्षु हुए है। जो नरनारायणदेव पीठस्थान का अति गौरव है। अपने संतो और हरिभक्तो ने भी अधिक परिश्रम करके सत्संग की सुन्दर प्रवृत्ति कर रहे है।

संपादकश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

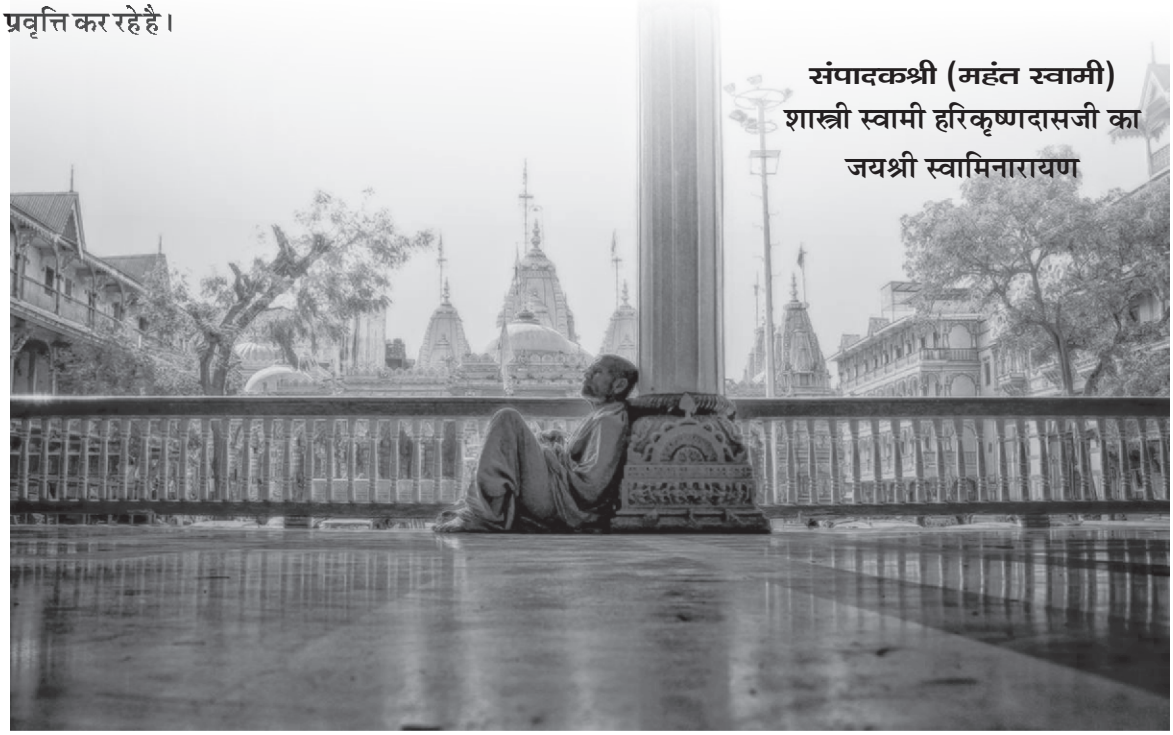

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(फरवरी-२०१८)

६ अमेरिका धर्म प्रवास से अहमदाबाद आगमन।

७ श्री स्वामिनारायण मंदिर टाकिया के नवीन मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा पवित्र हाथ से पूर्ण हुई।

८ श्री स्वामिनारायण मंदिर (शिखरबध्ध) सापावाडा सर्वोपरी श्री घनश्याम महाराज की प्राण प्रतिष्ठा स्वंय के पवित्र हाथो द्वारा किया गया।

९ धरमपुर (भूंडाय) श्री स्वामिनारायण मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा स्वयम् के पवित्र हाथो द्वारा पूर्ण हुआ।

१० श्री स्वामिनारायण मंदिर (मोयद) प्रांतिज मूर्ति प्रतिष्ठा स्वयके पवित्र हाथो द्वारा की गयी।

१२ श्री स्वामिनारायण मंदिर लुनावाणा पाटोत्सव अवसर पर आगमन।

१५ श्री स्वामिनारायण मंदिर लालोडा (ईडर देश) श्री हनुमानजी महाराज के सुवर्ण जयंती उत्सव में आगमन।

१६-१७ श्री स्वामिनारायण मंदिर भुज (कच्छ) आगमन।

१८ अहमदाबाद कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर परमकृपालु श्री नरनारायणदेव १९६ वाँ वार्षिकोत्सव अवसर पर सोलहत्रृंगार महाभिषेक पवित्र हाथ से विधिवत सम्पन्न हुआ।

१९ श्री स्वामिनारायण मंदिर वसई (टिंबा) मूर्ति प्रतिष्ठा स्वयम के पवित्र हाथो द्वारा किये।

२० सुबह श्री स्वामिनारायण मंदिर मकाखाड में अनपे पवित्र हाथो द्वारा मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा किये।
सायं कांकरिया श्री स्वामिनारायण मंदिर उत्सव-शहर चौर्यासी उत्सव पर आगमन।

२१ श्री स्वामिनारायण मंदिर कीडी (तालुका हलवद-मूली प्रदेश) मूर्ति प्रतिष्ठा स्वयम के पवित्र हाथो द्वारा। सायं - भुज कच्छ आगमन।

२२ श्री स्वामिनारायण मंदिर धाणेटी कच्छ मूर्ति प्रतिष्ठा स्वयम् के पवित्र हस्त द्वारा पूर्ण किये।

२३ श्री स्वामिनारायण मंदिर एप्रोच (बापूनगर) उत्सव हेतु आगमन वहाँ से सुघड (गांधीनगर) श्री स्वामिनारायण मंदिर उत्सव हेतु आगमन।

प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(फरवरी-२०१८)

८ श्री स्वामिनारायण मंदिर भाउपुरा के दशाब्दी उत्सव अवसर पर ठाकोरजी का षोडशोपचार अभिषेक अन्नकूट आरती आदि अवसर को स्वयं के पवित्र हाथो द्वारा विधिवत सम्पन्न किए।
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर अ.नि. ब्रह्मचारी स्वामी राजेश्वरानंदजी के गुणगान सभा में आये।

१८ अहमदाबाद कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर परमकृपालु श्री नरनारायणदेव १९६ वाँ वार्षिकोत्सव अवसर पर सोलहत्रृंगार महाभिषेक पवित्र हाथो से विधिवत सम्पन्न हुआ।

राम दुवारे तुम रखवारे

– साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुरधाम)

अपने मंदिर की बनावट सम्पूर्ण वैज्ञानिक है। मंदिर का आकार परमात्मा के स्थूल स्वरुप के अंग एवम् उपअंग के भाग को दर्शित करता है। मंदिर का प्रत्येक भाग परमात्मा के विराट स्वरुप होने के कारण पूजनीय एवम् वंदनीय दर्शनीय होता है। जब मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा की जाती है तब वे अंग तथा उस अंग के अधिष्ठाता देवी-देवताओ का आहवाह्न करके स्थापित विधिसम्पन्न होती है। नींव में स्थापित कूर्म शिला से लेकर कलश और ध्वजा तक सभी भागो तत्वो के अनुसार स्थापना की जाती है। अर्थात् समयान्तर में जब कभी मरम्मत की स्थिति आये तो उस तत्व का निष्पादन करके परमात्मा का कार्य किया जाता है। मंदिर की सीढियाँ – स्तम्भ द्वार को मंदिर में प्रवेश करते ही स्पर्श वदंन करने वाला होता है। मंदिर का छोटा सा भी अंश बेकार नही होता है।

उसमें प्रवेश करते ही मंदिर में सर्व प्रथम सीढियों के दोनो तरफ हनुमानजी और गणपतिजी का स्थान, मूर्ति का दर्शन होता है। दोनो देवता मंदिर के संरक्षक स्वरुप में है। हनुमानजी जगतजननी जानकी सीताजी के बचनानुसार भगवान के मंदिर द्वार पर रहकर रक्षा करने के लिए प्रतिबद्ध है। उसी प्रकार गणपतिजी ''माँ'' पार्वती के बचनानुसार भगवान के द्वार पर खडे रहने के लिए प्रतिज्ञ है।

संत तुलसीदासजीने हनुमान चालीसा में लिखे है कि ''राम दुवारे तुम रखवारे होत न आज्ञा विनु पैसारे'' अर्थात हे कपिराज आप भगवान राम के द्वार पर रहकर रक्षा करते है और आपकी आज्ञानुसार ही मंदिर में कोई प्रवेश प्राप्त कर सकता है।

रामायण में वर्णित है कि भगवान राम अयोध्या आये तथा उनका अभिषेक हुआ। राज्याभिषेक होने के बाद सीताजी की खोज में मददगार लोगो को योग्य सन्मान देकर विदा किये कुछ को सेवा में रख लिया गया। राम दरबार की सभी सेवाओ को बाँट देने के बाद हनुमानजी शांत पूर्वक बैठे थे। तब सीताजी बोली हनुमान। सभी सेवाओ का वितरण हो चुका है। आप जहाँ तक व्यक्ति दर्शन का अधिकारी नही बनता है। लाख प्रयत्न के बाद भी वह मंदिर में प्रवेश नही पाता है। मंदिर में प्रवेश के लिए ''विजा'' हनुमान-गणेशजी देते है, इस लिए भगवान के दर्शन हेतु दोनो देवो को आदर देकर ही हो सकता है।

मूर्ति प्रतिष्ठा विधिनुसार भगवान स्वरुप की प्राण प्रतिष्ठा करने से पूर्व गणेश-हनुमानजी की प्राण प्रतिष्ठा करना आवश्यक है। इसके बाद दोनो देवता मंदिर के अन्य भागो में जिस देव की जो जगह होती है उन देवताओ को प्रतिष्ठित करने की अनुमती देते है। उसमें विष्णुतत्व देवो को गणेशजी रुद्र तत्व के देव हनुमानजी और शक्ति तत्व में देवी पार्वती के सम्मुख स्थापित करके अग्रगण्य बनाते है।

रात्रि शयन समय में भगवान सुख सैया में सोते है। उस समय भगवान के नींद में विध्न न आये उससे रक्षा करते है। रात्रि में भी दोनो देव जागते है। एकबार सुलादेने के बाद मंदिर नहीं खोलना चाहिए। इस मर्यादा को तोडने वाले पर हनुमान एवम् गणेशजी कुपित होते है। प्रातःकाल गरुण घंटी बजाकर द्वार खोलना चाहिए।

संसार में स्थूल दुनिया के सिवाय सूक्ष्म दुनिया के चैतन्य आत्माओ का नियमन करना बहुत महत्व की बात है। सायद बड़े को चौकीदार रोक सकता है। लेकिन सूक्ष्म

आत्माओ को गणेश-हनुमान के बिना कोई अनुशासित नही कर सकता है। ऐसी आत्मा को मंदिर में प्रवेश भगवान की आज्ञा से ही हो सकता है। यदि आदेश नही तो मुख्य द्वार के बाहर रोक दिया जाता है।

हिन्दू धर्म के मूल परम्परा वाले मंदिरो के प्रवेश द्वार पर हनुमानजी गणपतिजी होते ही है। उसी प्रकार शिव मंदिर में धर्मराज नंदीजी रक्षा करते है तथा माता के मंदिर में शेर रखवाली करते है।

मंदिर में गणपति-हनुमानजी की मूर्ति परस्पर आमने-सामने स्थापित होती है। दोनो देवो की दृष्टि मेल की परम्परा दिखाती है। एक अखंड अद्‌भूद कार्य दैती है। ''राम दरबार'' के द्वार पर रहकर जिसको हमारी आज्ञा हो, जो हमारा हो ऐसे को हमारी अनुमति से प्रवेश दे दीजिएगा। तथा जहाँ भी भगवान राम बिरामजान हो वहाँ पर पहुँचकर आने वाले दर्शनार्थी को विना अनुमति के प्रवेश नही दे इस तरह की उत्तम और श्रेष्ठ सेवा आपको दी जाती है। माँ सीताजी की आज्ञा से भगवान राम अथवा भगवान के अन्य मंदिर जहाँ पर भगवान मूर्ति स्वरुप में विराजित वहाँ के प्रवेश द्वार पर हनुमानजी प्रगट रहते है। इस लिए अपनेमंदिरो में प्रवेश द्वार संरक्षक के रुप में हनुमानजी की मूर्ति स्थापित होती है। इस प्रकार गणपतिजी की भी कथा है। कैलास में भगवान शिव सदा ध्यानवस्था में अथवा कथा, कीर्तन, श्रवण अवस्था में रहते है। सती पार्वती प्रकृति माया की दूसरे रुप में संसार में व्याप्त रहती है। अर्थात् भक्तो का कार्य करना दुःख दूर करना इसके लिए दूसेर रुप में आना जाना लगा रहतै है। इस समय भगवान शिव की ध्यानावस्था भंग न हो इसलिए माता पार्वतीजी गणेशजी को द्वार पर बैठाकर वचन दी कि आप अपने माता-पिता की रक्षा हेतु द्वार पर ही बैठना पार्वती जी तो समयोचित बात कही थी। लेकिन गणेशजी रिद्धि-सिद्धि के पति बने तथा संसार की अन्य जिम्मेदारी उठाये सभी लोगो के अधिष्ठाता बने फिर भी मातृ बचन को सदैव हितकारी मानकर जहाँ-जहाँ ईश्वर बिराजे वहाँ द्वार पर अंशतः रखवाले बनते है। इस कारण से मंदिरकी रचना मे द्वार पर गणेशजी को संरक्षक एवम् हनुमानजी को साथ में स्थान दिया जाता है।

मंदिर में भक्तो के आने-जाने पर दोनो देवता का सम्पूर्ण नियत्रण है। मंदिर प्रवेश अनुमति के आधीन होता है। जो कोई भी व्यक्ति मंदिर में प्रवेश हेतु मंदिर में आते है। तभी दोनो देवता सात्विक लोग गणेशजी और तामसी लोगो को हनुमान भगवान के पास प्रवेश के लिए पूर्व आदेश लेना होता है। शतप्रतिशत सत्य है कि श्रीजी महाराज के स्वीकृति बिना कोई व्यक्ति मंदिर में प्रवेश पात्र नही होता है। सीढी के पास ही देवता उन्हे रोक देते है। भौतिक रुप से देखे तो सबसे सरल कार्य और अधिक से अधिक मंदिर दर्शन में होती है। तो भी अधिक लोग मंदिर दर्शन से वंचिर रह जाते है। उन्हे बार-बार प्रेरित करने पर भी कोई लाभ नही मिलता है। क्योकि दोनो देवो की अनुमति उन्हे नही मिली है। क्योकि हनुमानजी रुद्रावतार होने से अग्नितत्व प्रधान और गणेशजी सतो तत्व प्रधान अग्नि सत होने पर शांत हो जाती है। गणेश के अकाल महावीर हनुमान की अग्नि कोई रोक नही सकता है।

जहाँ पर मात्र हनुमानजी का मंदिर होता है। उसके सामने दूर तक निवास स्थान नही होता है।

मंदिर के प्रवेश द्वार पर विराजमान गणपति-हनुमानजी के पास चप्पल नही उतारना चाहिए आते-जाते दोनो देवो का उपराक मानना चाहिए। जो अनादर करता है वह कुछ ही दिनो में मंदिर आना बंद कर देता है। वह बाहरी कारण जो भी माने लेकिन सत्य कारण देवो ने रोक लगादी है।

नव निर्मित कई मंदिरो में भगवान के सिंहासन के साथ मंदिर के अंदर हनुमान-गणेशकी मूर्ति रखते है। यह शास्त्रोका प्रमाणित तरीका नही है। इसमें इष्टदेव और रक्षकदेव खुश नही होते है। बल्कि मंदिर में मलिन तत्व रहने लगते है।

उसी प्रकार जिस हरिभक्त के घर पर सम्प्रदाय के नियमानुसार मूर्ति प्राण-प्रतिष्ठा सेवा होती है ऐसे सत्संगी के घर द्वार पर हनुमानजी अंशतः उपस्थित रहते है आदि आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराज और सद्‌गुरु गोपालानंद स्वामी के वचन से सत्संगी की रक्षा करने के लिए कष्टभंजन देव प्रतिबध्धहै।

श्री घनश्याम की जय

– शा. स्वा. निर्गुणदासजी (अमदावाद)

मालवरागे रूपकताले गीयते ।

जय जय सुखदवरं कमलाननलोभं दर्शयमुनिवरवन्दितशौभं ।
माधवरूपमखिलविदित जय घनश्याम हरे जय घनश्याम हरे ॥१॥

जय जय कीर्तिधरं श्रितशान्तिसमुद्रम् ॥
दृष्टिचलितविधिहरिहररूद्रं । माधव..॥२॥

जय जय विजयकरं धतसुमनःसुहारम् ॥
निजचरणाश्रितविदलितमारम । माधव..॥३॥

जय जय सुमतिवरं निजजनहितभाजं ॥
रतिविलसितमुनिसदसिविराजं । माधव..॥४॥

जय जय जगदुदयं गजगतिकमनियम् ॥
कनकवसनभूषणरमणीयम् । माधव..॥५॥

जय जय मधुरवं रतिपतिमतिगम्यम् ॥
विविधविचित्रजगदेकरम्यम् । माधव..॥६॥

जय जय कुमतिहरं धृतनटवरवेशम् ॥
शुभदमुनिराजिकृतपरिवेषम् । माधव..॥७॥

जय जय सद यद्दशं अवतरणनिदानं ॥
ब्रह्ममुनिनित्यविरचितमानं । माधव..॥८॥

इति श्रीब्रह्मानंदमुनिवरचिताष्टपदी समाप्ता

सद्गुरु श्री ब्रह्मानंद स्वामी ने गुजराती भाषा और व्रज भाषा में असंख्य की रचना किये है । और सत्संग में अधिक प्रसिद्ध है । वे संस्कृत भाषा के भी विशेषज्ञ थे । उनका परिचय हम संस्कृत में रचित अष्टको को समझेगे तथा उनसे उनकी विद्वता का ज्ञान है जिसके कारण उन्हे शत विधान और सहस्त्रवधानी के पद से अंलकृत किया जाता है उसका दृश्य दिखाई देता है । भगवान की मूर्ति का गुणगान करना उसी प्रकार अपने इष्टदेव भगवान श्री स्वामिनारायण की सुमधुर दिव्य लीला चरित्र का वर्णन करने में उनहे परम आनंद मिलता है । परमात्मा की सुमधुर मूर्ति में कैसे मन लगा दे इस अष्टक केवर्णित स्मरण को करे तो मूर्ति हृदय में बस जाती है । ऐसी अद्भूत संस्कृत रचना के शब्दो को समझने का प्रयास करे ।

जय जय सुखदवरं कमलाननलोभं दर्शयमुनिवरवन्दितशौभं ।
माधवरूपमखिलविदित जय घनश्याम हरे जय घनश्याम हरे ॥१॥

हे मेरे इष्टदेव प्रभु घनश्याम आपका ही सब जगत पर जय जयकार इस लोक एवम् अन्य लोक में हो रहा है । कमला जो लक्ष्मीजी जिनका मुख कमल भी अधिक दिव्य शोबा से युक्त सुशोभित हो रहा है । जिनके दर्शन का लाभ बडे-बड़े मुनि करके अपने आत्मा में अखंड सुख को प्राप्त करते है । उन्हे भी बड़ा सुख देने वाले आप के अलौकिक स्वरुप को दर्शन ईच्छा रखते है । यह सारा संसार जानता है । ऐसे माधव श्रीहरि घनश्याम आपका सर्वत्र जय जयकार हो ।(१)

जय जय कीर्तिधरं श्रितशान्तिसमुद्रम् ॥
दृष्टिचलितविधिहरिहररूद्रं । माधव..॥२॥

हे प्रभु आप ऐसे सागर पर्यन्त जगत में कीर्ति धारण

करने वाले है यदि कोई जीव आपके आश्रय में आ जाता है तो उसका अन्तकरण सदैव के लिए शांत का आभास करता है। इस लिए आप की कृपा दृष्टि को प्राप्त करने के लिए ब्रह्मा, शिव और विष्णु भी उत्साह पूर्वक यत्न करते है। ऐसे घनश्याम प्रभु आपकी सर्वत्र जय जयकार हो रही है।(२)

जय जय विजयकरं धतसुमनःसुहारम् ॥

निजचरणाश्रितविदलितमारम । माधव..॥३॥

हे प्रभु आप की जय जयकार बोलने वाले की सभी जगह सभी कार्यो में विजय रुपी सफलता मन को प्रसन्न करने वाली सुगंधित फूल की माला धारण करने का अवसर प्रदान करती है। आपकी शरण में आये हुए सभी भक्त को विचलित करने वाला, काम, क्रोधआदि शत्रुओ को हराकर उस पर विजय दिलवाता है। ऐसे घनश्याम प्रभु आपकी सर्वत्र जय जयकार हो रही है। (३)

जय जय सुमतिवरं निजजनहितभाजं ॥

रतिविलसितमुनिसदसिविराजं । माधव..॥४॥

हे प्रभु आप की जयकार बोलने वाले भक्त को सात्विक श्रेष्ठ समझदारी युक्त बुद्धि देकर अपने भक्तो का सर्व प्रकार से हित देने वाले, मोक्ष देने मे सहायक तथा अक्षरधाम की पदवी प्रदान करने वाले है। काम जैसे आन्तरिक शत्रुको जीतकर आप-जैसे दिव्य सर्वोपरि स्वरुपा का चिन्तन करने वाले वृत्तधारी परमहंसो के मध्य विशाल सभा में सदा साक्षत् बिराजते हो। ऐसे घनश्याम प्रभु आपकी सर्वत्र जय जयकार हो रही है।(४)

जय जय जगदुदयं गजगतिकमनियम् ॥

कनकवसनभूषणरमणीयम् । माधव..॥५॥

हे प्रभु आप की जय जयकार बोलने वाले को इस संसार में स्वयं के लिए योग्य सभी प्रकार की उदय और प्रगति सुख-समृद्धि प्रदान करने के लिए जैसे कोई गजराज हाथी दृढता पूर्व गति से आगे बढता है वैसे उसकी प्रगति करते है। और स्वर्णमयी अलंकार सुंदर मनप्रिय वस्त्र जैसा आपधारण करते है वैसे ही भक्तो को प्रदान करते है। ऐसे घनश्याम प्रभु आपकी सर्वत्र जय जयकार हो रही है।(५)

जय जय मधुरवं रतिपतिमतिगम्यम् ॥

विविधविचित्रजगदेकरम्यम् । माधव..॥६॥

हे प्रभु मधुर कंठ द्वारा संगीत के ताल पर आप का गुणगान गा करके जय जयकार करने वाले भक्तो को साक्षात कामदेव को न मिलने वाला। इस संसार में रंग-बिरंगे सुखदुख से पूर्ण माया वी संसार में मात्र आप भक्तो को सुख प्रदान करते है। ऐसे घनश्याम प्रभु आपकी सर्वत्र जय जयकार हो रही है।(६)

जय जय कुमतिहरं धृतनटवरवेशम् ॥

शुभदमुनिराजिकृतपरिवेषम् । माधव..॥७॥

हे प्रभु आप की जय जयकार करने वाले के मन में से अपने को कष्ट देकर दुःखी करने वाला कमजोर निर्णय से दूर करके दुर्बुद्धि से भी दूर करते है। इसके लिए जैसे कोई बहु रुपिया अनेक रुप धारण करता है। इसी प्रकार आप भी अनेक प्रकारका रुप धारण करके प्रगट होते है। संसार को शुभ आशीर्वाद देने वाले मुनियो के मन को खुश करने वाले अनेक वस्त्र धारण करते है। ऐसे घनश्याम प्रभु आपकी सर्वत्र जय जयकार हो रही है ।(७)

जय जय सद यद्दशं अवतरणनिदानं ॥

ब्रह्ममुनिनित्यविरचितमानं । माधव..॥८॥

हे प्रभु जय जयकार करने वाले सत्य सनातन सात्विक ब्रह्मज्ञानी ऐसा संतो को ही दिखाई देता है। ये आपका रुप साक्षात प्रमाणसर अवतरित है। ये अवतार लेकर जो चरित्र का कार्य किया है। लीलाये की है। उसका प्रतिदिन स्वामी ब्रह्मानंद मुनि अनेक भाषाओ में पदो की रचना करते है। उसका सम्पूर्ण संसार में गायन करते है। ऐसे घनश्याम प्रभु आपकी सर्वत्र जय जयकार हो रही है।(८)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के मुख से आशीर्वाद वचन

- संकलन : गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापुनगर)

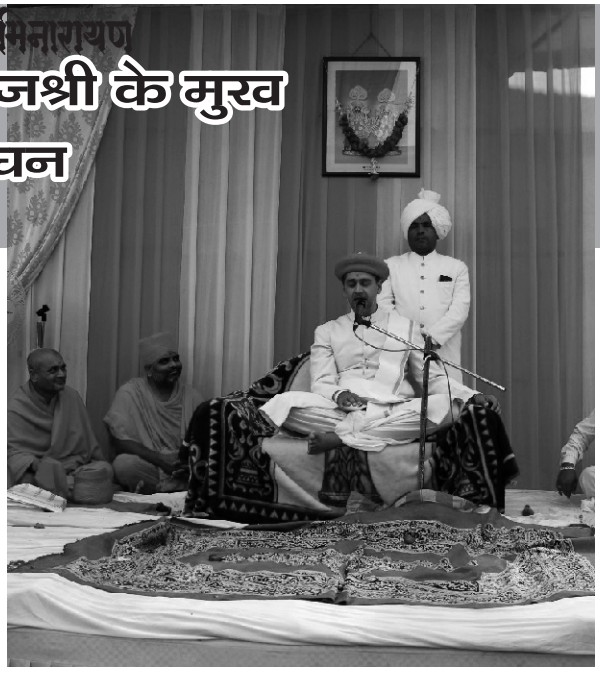

स.गु. गोपालानंद स्वामी जन्म स्थान हवेली उद्घाटन के अवसर पर टोरडा धाम ता. २१-१-२०१८ : आज उत्सव का शुभम्मभ हुआ । हमको जैसा ज्ञात है वैसे अपना सम्प्रदाय हे इसके पीछे बहुत बडा इतिहास है । कई जगहो पर दंत कथाये बहुत बड़ी होती है । इतिहास बनाना पडता है । जब कि अपना इतिहास Existing है । अपने पास पात्र छोटे-बड़े सामान तथा स्थान प्रसाद स्वरुप है । सर्व प्रथम देखे तो नरनारायणदेव के मंदिर से शुरु होकर महाराज की जन्म भू मि छपैया धाम और गोपालानंद स्वामी का जन्म स्थल ये टोरडा धाम अपने पास है । ये कोई मंदिर नहीं है, जगह नही वरन तीर्थ है यह सत्य है । तीर्थ के अन्दर हम Compromise नहीं करते समयानुसार अलग-अलग प्रकार के मंदिर बनते है लेकिन अपना प्राचीन प्रणाली पर आधारित है । सम्प्रदाय के कार्य प्रणाली के अनुसार हम कार्य करते है और इसी तरह का कार्य करके हम लोग गर्व अनुभव करते हैं । हम लोग हवेली के दूसरे मंजिल पर गये अन्दर से शांति का अनुभव हुआ । जगह बड़ी नहीं है जो जगह है उसके आधिक दान दाताओ का अनुभव हुआ । जगह बड़ी नहीं है जो जगह है उससे अधिक दान दाताओ का जो दान किये है मकान में बगीचे में भी अधिक जगह होगी । परंतु जिलने में ये हवेली है उसमें बैठकर कोई पूजा कर्ता है । भगवान का भजन करता है तो अन्तर्मन में शांति का अनुभव प्राप्त होता है । एक माला भी फेरने पर जीवन धन्य हो जाता है ऐसी इस स्थान की महिमा है । हम सब भाग्य शाली है कि जो यह भूमि हम लोगो के पास है । ये गर्व की बात है । विश्व में ऐसा कही नहीं है । इतिहास सर्जन में छोटे से छोटे हरिभक्त तक पहुंचाने में महंत स्वामी तथा छोटे सभी संतो कां श्रम है जो पुरुषार्थ किये है वे धन्यवाद के पात्र है । आज से १५-२० वर्ष पहले यहाँ रहना अत्यन्त कठिन था । यहाँ पर कोई सुविधा नहीं थी । आज अधिक अच्छा है । संत प्रेरित किये आप सभी के योगदान से इस स्थल का धीरे-धीरे विकास आज हम सब देख रहे हैं । उसके सामने आज हम देखे कि महोनथाल भरा पड़ा था । आप लोगो का भी भोजन का समय भी हो गया है । संत भक्तो ! भाईयो-बहनो सभी के श्रम का फल आज हम देख सकते हैं ।

प्रसादी के ये सभी स्थल स्थायी बने रहे । आप उसे देख रहे है । इसका हमें गर्व है, भुज मंदिर के वृद्ध संत सनातन स्वामी जिनकी उम्र १०० वर्ष है । जो सम्प्रदाय के सबसे वृद्ध व्यक्ति है । वे आज भी भारत के कोने-कोने जहाँ पर प्रसादी के स्थल है खोजकर छत्री बनाते है । हमारा हाथ पकडकर उस जगह पर दिखाने ले जाते है । पुराने संतो को पुराने वस्तुओ के प्रति लगाव होता है । उसके पीछे की बात ये लोग इस सम्प्रदाय की विकास मार्ग को देखे है । आधी रात में सोया नहीं आया ये गाडी नहीं आई । वृद्द संतो और बड़े बापजी से सुना है कि हमारे ये प्राचीन मंदिर और सभा मंडप जहाँ पर लकडी के स्तम्भ है । पहले इन जगह पर उत्सव के समय आशोपालव के तोरण बाँधते थे । वर्तमान में बल्ब हुआ । लेकिन तोरण बाँधते समय पुराने संत स्तम्भ में कील

को नही लगाने देते थे । कहते ते हमे पता है कि स्तम्भ कैसे तैयार हुआ है । इस लिये इसमे कील न ढोके । अगाधश्रद्धा, विश्वास रुपी इस सम्प्रदा यकी भवने बनी है । इके उपर कोई खीली न ढोके इसको ध्यान देना होगा । आप लोगो को ऐसी कील लगे ऐसा नहीं है । आप लोग दूर से अपना मकान और घर बंद करके लगभग । महीने से यहाँ आये है । यह साधारण बात नहीं है । सभी लोग मिलकर यहाँ तक आ सके है अन्यथा विकल्प अनेक है । ऐसे पवित्र जगह में तन, मन, धन से आप सेवा दे रहे है ये आपकी समझ तथा कील नही लगी स्पष्ट होता है । आप की निष्ठा देखकर हमारा हृदय गद्‌गद् हो जाता है । निश्चित ही है कि निष्ठा और श्रद्धा वगैर आप लम्बे समय तक नही रह सकते है आप आये है इसी तरह आते भी रहियेगा ।

संसार में कई जगहो पर लोगो को नया करना होता है तो वहाँ पर नई घटना बनाते है । कोने से या कही गड्डे में से भगवान को प्रगट करते है । जब कि हम लोगो को पूर्ण भगवान मिले है । अभी हमने देखा कि आधी रात में मंदिर तैयार कर दिये । हनुमान जी प्रतिष्ठित हो गये । कितने उचे है पता नही लोग कहते है स्तम्भ है । अच्छी बात किसी की टीका करना अच्छी बात नही है । परिणाम स्वरुप धोखा नही तो क्या हो गा ? कहने का अभिप्राय लोगो को बात बनानी पड़ती है । जबकि अपने पास जो है वास्तविक है । अपने को गर्व है कि अहमदाबाद नरनारायणदेव के भाग मे क्या नही आया । कल वसंत पचंमी है । मूली मंदिर में पैर रखने की जगह भी नही प्राप्त हो । कल ब्रह्मानंद स्वामी का जन्म दिन है । आज गोपालानंद स्वामी का उत्सव चल रहा है । मूली मंदिर का पाटोत्सव है । हमें विशाल मूली मंदिर मिला है । आप कल्पना करे अपने पास क्या नही है । ये नंद संत सादे या टूटी-फूटी-गद्दी के उपर बैठकर बोले सब होते हुए कंगाल । ये लोग मर्सीडीझ या ओडी में बैठकर नही कहे है सिद्ध हो कर कंगाल ? जैसा मिला स्वीकार ये गर्व की बात है ऐसा कह सकते है उस समय ही नहीं बल्कि वर्तमान समय में बड़े संत या साधु उसी प्रकार उम्र में छोटे-बड़े हरिभक्त सभी पर भगवान की कृपा है । उनके उपर चार हाथ का आशीर्वाद माने तो कभी दु:खी नही होता है ।

परोक्ष लोग यहाँ दर्शन करने आते है और गोपालानंद स्वामी के नाम से कष्ट कट जाता है । अभी स्वामीजी बात कर रहे थे टोरडा से शामलाजी जाते समय ५ की.मी. के बीच में बुजरासण गाँव के पास भागेली नहर जहाँ पर गोपाालनंदजी बैठते थे वहाँ पर यादगार के लिए बेदी बनाई गयी है । किसी को मियादीबुखार हुआ हो या अन्य कष्ट हो, गोपालानंद स्वामी का नाम लेकर एक पत्थर रख देने पर ठीक हो जाते है आप सोचिए जिसने कभी भी स्वामिनारायण का दर्शन न किया हो, न नरनारायणका तो भी गोपालानंद स्वामी के नाम से काम हो जाता है । ये आस्था (प्रमाण) अपने पास है । हम सभी के पिता स्वामिनारायण भगवान अपने साथ है । भगवान अपने को बहुत बड़े मिले है । ५०० बड़े नंद संतो के एक-एक मंदिर गिने तो ५०० मंदिर होते है । अरे संतो के पास दर्जन मंदिर होत? लोग इतने सक्षम है । लेकिन एक भी संत ने भगवान के सिंहासन पर नही बैठे प्रत्येक संत भगवान को ही आगे रखे । नंद संत भगवान की परख में अपनी शक्ति लगा दिये हम लोग इस परम्परा में आते है । ऐसे भगवान ऐसे संत और भक्त अपने को मिले है इस कारण से हम लोग सुखी है ।

आज सभी संत-भक्त इस स्थान के लिए जागृत हुए है । के.पी. स्वामी उनका मंडल उसी प्रकार अन्य सभी संत भक्त यहाँ पर सेवा दिये है । वे धन्यवाद के पात्र है । कारण यह है कि सौने के मुहर की कीमत कभी कम हो लेकिन ऐसे स्थान की कीमत कभी कम नही होती है । ऐसे पवित्र स्थान में की गई सेवा श्रीहरि स्वयं स्वीकार करते है । छोटी सी छोटी सेवा, कभी मैं बड़ी मूल्य की बात करता नही । तन, मन, धन से की गयी छोटी सी भी सेवा ऐसे स्थान के नाते महाराज अति प्रसन्न होते है ।

श्री स्वामिनारायण मंदिर जयपुर (राज.)
दीनाथ की गली - चाँद पोल बाजार
मो. : ९१-९४६१३३०६९८

(एक अभिव्यक्ति)

श्री स्वामिनारायण म्यूजियम - इसमें क्या है ?

- अतुलभाई भानुभाई पोथीवाला (अहमदाबाद)

प.पू. बड़े महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराज के शुभ संकल्प से पूर्ण हुआ श्री स्वामिनारायण म्यूझियम श्री स्वामिनारायण संप्रदाय की ''आदर्श भेंट'' है।

श्रीहरि ने जो सामान स्वयं उपयोग में लिये थे, तथा उनके द्वारा स्पर्शित सभी सामान एवम् वस्तुए तथा उनके सानिध्य को प्राप्त करने वाले वृक्ष, पालखी, दरवाजा, गाडी, सीढ़ी, पत्थर, शस्त्र एवम् शास्त्रीय पुस्तके इन सभी अलौकिक और दिव्य वस्तुओ को सजाकर सुंदर रुप से व्यवस्थित रखा गया है।

प्रत्येक खण्ड में प्रवेश करते ही एक प्रकार का पवित्र स्पन्दन का अनुभव होता है। श्रीहरि के लीला चरित्र के प्रत्येक अवसर और उसमे प्रयोग मे आयी वस्तुए तथा उसे देखने। पढने से भाव विभोर हो जाते है।

श्री स्वामिनारायण भगवान के उपयोग में लिए गये नहाने वाला पत्थर तथा जिस पत्थर पर बैठकर श्रीहरि भोजन ग्रहण करते थे जैसे वस्तुओ को प्रत्यक्ष छू सकते है, इसको स्पर्श करते ही रोमांचित हो जाते है ऐसी Live साधन-सामग्री है।

होल नं. ८ में दर्शन हेतु रखी श्रीहरि के नाखून, बाल, दाँत, अस्थि इसके दर्शन मात्र से श्रीहरि की प्रत्यक्षता का अनुभव होता है। आँखो से भाव युक्त आँसु गिरने लगते है ऐसी दिव्यता इस हाल में हमेशा व्याप्त रहती है।

पीढी दर पीढ़ी से सुरक्षित रखी ये सभी प्रसाद की दिव्य वस्तुए म्यूजियम में प्रस्तुत करके पू. बड़े महाराजश्री केवल मात्र सत्संग परिवार के लिए ही नही वरन संसार के सभी मुमुक्षु धर्मज्ञान मनुष्यो के लिए अद्‌भूत द्रष्टांत दिये है।

इस दृष्टांत के लिए हम सभी सदैव इनके कर्जदार रहेगे।

प्रतिदिन के जीवन में भागदौड से जब थकान और डिप्रेशन का आभास हो तब स्वामिनारायण म्यूजियम में आना चाहिए यहाँ पर संग्रहित सभी दिव्य प्रसादी के वस्तुओ का दर्शन करने से शरीर में अद्‌भुत शक्ति का संचार होता है।

आधुनिक काल में मनुष्य का जीवन मात्र Mobile जैसे हो गया है। स्वामिनारायण म्यूजियम का दर्शन करने से शरीर की थकान दूर हो जाती है। और मन खुश हो जाता है।

ध्यान या मेडीटेशन से अधिक सहजता से श्रीहरि के ''साक्षात् वाईब्रेशन'' का आभास होता है।

सम्पूर्ण विश्व में परमात्मा के प्रत्यक्षीकरण की अलौकिकता का Live अनुभव देने वाला एक मात्र केवल श्री स्वामिनारायम म्यूजियम है।

अहमदाबाद मंदिर में श्रीनरनारायणदेव के नये पूजारी की नियुक्ति

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर अहमदाबाद सम्प्रदाय के सर्व प्रथम महा मंदिर में बिरामजान परमकृपालु भारत खंड के राजाधिराज श्री नरनारायणदेव के नये पूजारी ब्रह्मचारी संतो की नियुक्ति की गयी है। (१) स.गु. ब्रह्मचारी स्वामी अनंतानंदजी (२) स.गु. ब्रह्मचारी स्वामी मुकुंदानंदजी (३) स.गु. ब्रह्मचारी स्वामी रामस्वरुपानंदजी (४) स.गु. ब्रह्मचारी स्वामी घनश्यामानंदजी ये चारो ब्रह्माचरी संत अ.नि. स.गु. ब्रह्मचारी स्वामी राजेश्वरानंदजी के शिष्य है।

श्री स्वामिनारायण म्युझियम

श्री स्वामिनारायण म्युजियम के द्वार से

म्यूजियम का साँतवा वार्षिक स्थापना दिवस

ता. १८-२-२०१८ फाल्गुन सुद तृतीया अपने हरिभक्तो के लिए पूरा दिन आसोपालव के तोरण समान हरा बना रहा । प्रातः कालुपुर मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा पूरे धर्मकुल के पवित्र हाथो से श्री नरनारायणदेव के अभिषेक से प्रारम्भ करके सायं तक पूरे दिन समय सारिणी छोडकर जिये थे ।

लगभग साढे आठ लोगो का दर्शन तथा साढे सात लाख लोगो का अभिषेक सात वर्ष के अन्दर रजिस्टर पर हुआ है । दोपर ३ बजे म्यूजियम में अ.नि. छोटाभाई शामलदास पटेल मुख्य यजमान पद पर १६० पीढा पर हरिभक्तोने श्री नरनारायणदेव के सानिध्य में समूह महापूजा और अभिषेक के लिए बैठ गये थे । माला और अगुंली के द्वारा एकांत मौन त्याग कर ८ नंबर के हाल में आज उच्च स्वर में श्लोक बोल रहे थे ।

८ नंबर हाल के बाहर समस्त म्यूजियम में ऐसा ही दृश्य था । प्रत्येक के मन में इस उत्सव के प्रति अपना पन था । प्रत्येक को अस्ताचल सूर्य उगता लग रहा था । म्यूजियम के दिव्य वातावरण का एक पल भी नष्ट होने के लिए तैयार नहीं थे । प्रत्येक वर्ष की तरह एक दूसरे को वोट्स अप की ब्लू डबल क्लिक की तरह मिल रहे थे । चेहरा का अध्ययन करने वाले झवेरी लाल बोले की ये लोग दूसरे की तुलना में अगल ताजगी युक्त दिखाई दे रहे थे ।

प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री द्वारा महापूजा की पूर्णाहुति आरती करने के पश्चात् १२ नंबर के हाल में यजमान परिवार द्वारा धर्मकुल का पूजन और प.पू. बड़े महाराजश्री द्वारा यजमानो के सन्मान हेतु सभा हुई थी । बहनो को दर्शन का लाभ देने के लिए प.पू. गादीवालाश्री भी आये थे । अहमदाबाद मंदिर के महंत स्वामी सहित अनेक धामो के संत और सांख्य बहने भी आयी थी । सालो से गुजरात समाचार दैनिक पत्र में प्रथम पेज पर जिसका फोटो छपता है वैसे फोटो जर्नलिस्ट श्री झवेरीलाल महेता (वर्तमान में भारत सरकार द्वारा महामहिम राष्ट्रपति के हाथो द्वारा पद्मश्री एवार्ड दिया गया है) इस प्रसंग पर प.पू. बड़े महाराजश्री द्वारा सन्मान किया गया । तत्पश्चात प.पू. बड़े महाराजश्रीने सभी को आशीर्वाद दिये । प.पू. बड़े महाराजश्रीके आवाज से ऐसा कान में लगा कि कई दिन के उपवास पस्चात पारणा कर रहे हो । सभी लोग १२ नंबर हाल की तरफ आकर्षित होने लगे । आशीर्वचन के पश्चात सभीने महाप्रसाद ग्रहण करके दिव्य अनुभव करते हुए आगामी वर्ष पर पुनः आने की प्रतिज्ञा करते हुए लोग अलग हुए ।

– प्रफुल खरसाणी

प.पू. मोटा महाराजश्रीना स्वरवाळी कोलरट्युन (फक्त वोडाफोन धारको माटे)

प.पू. मोटा महाराजश्रीना स्वयचनवाळी कोलरट्युन मोबाईलमां डाउनलोड करवा नीचे मुजब करवुं.

मोबाईलमां ct>स्पेस> 270930 टाईप करी. 56789 नंबर पर SMS करवाथी कोलरट्युन शरु थशे.

श्री स्वामिनारायण म्युजियम मे भेट देनेवालों की नामावलि-फरवरी-१८

रु. १,००,०००/-	देवशीभाई गामी - यु.के.
रु. ६५,००५/-	समीर कानुगा - अमेरिका
रु. ५१,०००/-	प.भ. डॉ. कांतिभाई पटेल - आकलैन्ड - न्यूजीलैण्ड
रु. ३२,५३५/-	सुनिल एस. पटेल - अमेरिका
रु. १०,०००/-	ठाकोरभाई पटेल - अहमदाबाद
रु. ७,५००/-	महेन्द्रभाई छोटाभाई - कालीगाम
रु. ५,१५१/-	अ.नि. प.भ. मणीलाल लक्ष्मीचंद भालजा साहब, अ.नि. प.भ. नंदलालभाई भाईचंदभाई कोठारी तरप से ह. प्रमोदभाई झाला
रु. ५,०००/-	मीनाबेन के. जोशी - बोपल
रु. ५,०००/-	पटेल राजेशभाई नटवरलाल - बोपल-अहमदाबाद
रु. ५,०००/-	अ.नि. शारदाबेन अंबालाल पटेल - अहमदाबाद - ह. गीताबेन

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्री नरनारायण देव की मूर्ति का अभिषेक कराने वालों की नामावलि फरवरी-१८

दि. ०१-०२-२०१८	कौशिकभाई डाह्याभाई पटेल - मणीनगर - ह. मोनीष पटेल - केनाडा
दि. ०७-०२-२०१८	चंदुभाई नारणदास पटेल - डेरीवाला - डांगरवा
दि. ०८-०२-२०१८	नायरा चिंतक पटेल (पहलीबार वतन में आये) ह. ईन्द्रवदन रावजीभाई पटेल (नारणपुरा)
दि. १०-०२-२०१८	चार्वी अश्विनभाई जागाणी - अम्बावाडी - ह. डॉ. मगनभाई जागाणी
दि. ११-०२-२०१८	भीमजीभाई हिराणी - मोम्बासा
दि. १८-०२-२०१८	श्री स्वामिनारायण म्यूजियम ७ वाँ पाटोत्सव के यजमान अ.नि. छोटाभाई शामलदास पटेल परिवार - ह. महेन्द्रभाई - कालीगाम
दि. २०-०२-२०१८	कमलेशभाई बचुभाई पटेल - नारणपुरा - चि. तरुण के विवाह हेतु
दि. २४-०२-२०१८	परेश खीमजी - यु.के. कार्डिफ

श्री स्वामिनारायण म्यूजियम के ८ वें स्थापना दिवस के यजमान श्री करशनभाई के. राघवाणी परिवार - बलदिया - कच्छ

श्री स्वामिनारायण म्यूजियम के ९ वें स्थापना दिवस के यजमान श्री जनकभाई गोकलदास पटेल परिवार - लवारपुरवाला वर्तमान अहमदाबाद निवासी

सूचना :श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. मोटा महाराजश्री प्रातः ११-३० को आरती उतारते हैं ।

शुभ प्रसंग पर भेंट देने के योग्य अथवा व्यक्तिगत संग्रह के लिये - श्री नरनारायणदेव की प्रतिमा वाला २० ग्राम चांदी का सिक्का म्युजियम में प्राप्त होता है ।

૧.શ્રી સ્વામિનારાયણ મ્યુઝિયમના ૭માં વાર્ષિક સ્થાપના દિન નિમિત્તે શ્રી નરનારાયણદેવના અભિષેક બાદ મહાપૂજાની આરતી ઉતારતા પ.પૂ. મોટા મહારાજશ્રી તથા પ.પૂ.લાલજી મહારાજશ્રી તથા તે પ્રસંગે પોતાના સન્માન બાદ પોતાની અંતરની ભાવના વ્યક્ત કરતા જાણીતા ફોટો જર્નાલીસ્ટ શ્રી ઝવેરીલાલ મહેતા. ૨. લાલોડા મંદિર (ઈડર દેશ)માં શ્રી હનુમાનજી મહારાજની સુવર્ણ જયંતી પ્રસંગે પ.પૂ.આચાર્ય મહારાજશ્રીની નિશ્રામાં શ્રી હનુમાન ચાલીસાની કથા ૩. સુઘડ ગામે સભામાં આશીર્વાદ આપતા પ.પૂ. મહારાજશ્રી ૪. રાણીપ મંદિરના પાટોત્સવ પ્રસંગે સભામાં આશીર્વાદ આપતા પ.પૂ.આચાર્ય મહારાજશ્રી. ૫. નવા નિકોલમાં શાકોત્સવ કરતા પૂ. મહંત સ્વામી શા. હરિકૃષ્ણદાસજી તથા સંત મંડળ.

શ્રી નરનારાયણ દેવ દેશ ગાદીના નૂતન મંદિરમાં પ્રાણ પ્રતિષ્ઠા મહોત્સવ

શ્રી નરનારાયણ દેવ દેશ ગાદીના નૂતન મંદિરમાં પ્રાણ પ્રતિષ્ઠા મહોત્સવ

સાપાવાડા (ઈડર)

ટાંકીયા (ગાંધીનગર)

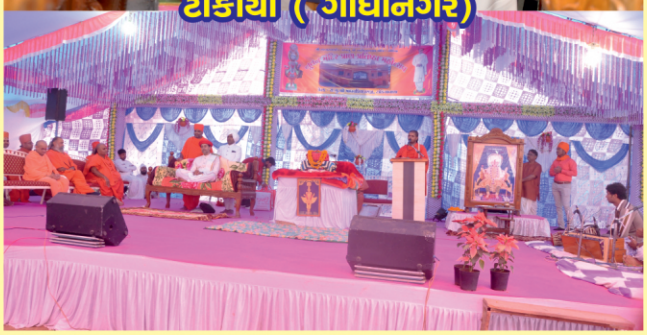

વસઈ (ટીંબા)

મકાખાટ

૧.ઘાટલોડિયા મંદિરના પાટોત્સવ પ્રસંગે ઠાકોરજીની અન્નકૂટ આરતી ઉતારતા પ.પૂ.આચાર્ય મહારાજશ્રી. ૨.દિયોદર (બનાસકાંઠા) મંદિરના પાટોત્સવ પ્રસંગે ઠાકોરજીનો અભિષેક કરતા શા. રામ સ્વામી અને શા. મુનિ સ્વામી તથા અન્નકૂટ આરતી ઉતારતા પ.પૂ.મહંત સ્વામી શા. હરિકૃષ્ણદાસજી. ૩.ભીમપુરા (માણસા) મંદિરના ૧૦માં પાટોત્સવ પ્રસંગે વ્યાસપીઠની આરતી ઉતારતા પ.પૂ. આચાર્ય મહારાજશ્રી. ૪. શ્રી સહજાનંદ ગુરૂકુળ - કોટેશ્વર પ્રાર્થના મંદિરના પ્રથમ પાટોત્સવ પ્રસંગે વ્યાસપીઠની આરતી ઉતારતા યજમાન પરિવાર. ૫. કાંકરિયા મંદિર પાટોત્સવ અને શહેર ચોર્યાસી નિમિત્તે પ.પૂ.આચાર્ય મહારાજશ્રીની શુભ નિશ્રામાં રાત્રી પારાયણ કરતા મહંત શા. સ્વામી વાસુદેવચરણદાસજી. ૬. હિંમતપુરા ગામમાં નૂતન મંદિરની ખાત વિધિ કરતા પ.પૂ.આચાર્ય મહારાજશ્રી.૭ લુણાવાડા મંદિરના પાટોત્સવ પ્રસંગે ઠાકોરજીના અન્નકૂટની આરતી ઉતારતા પ.પૂ.આચાર્ય મહારાજશ્રી.

सत्संग बालवाटिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

भगवान भक्तवत्सल है

– शास्त्री हरिप्रियदासजी (गांधीनगर)

एकबार ईष्टदेव स्वामिनारायण भगवान कच्छ के आधोई में भक्तराज रायधनजी के यहाँ आये थे तब की यह बात है।

रायधनजी भक्त और करणीबा तथा इस गाँव के विशेष हरिभक्तो, आधोई में सत्संग बहुत अच्छा । ये भक्त रामानंद के शिष्य ते। बाद में निष्कुलानंद स्वामीजी गाँव में सत्संग किये थे । भगवान अधोई आये थे । करणीबा कहती है, महाराजजी पधारिये । महाराज कहते है''बैठना बाद में, भचाउ से अडवाणा पैदल चल कर आये है । अर्थात् भूख तेजी से महाराज मैं अभी भोजन की व्यवस्था करती है । नही, भूख अति तीव्र लगी है। एक पल भी नही रह सकते है। घर में जो तैयार है वही लाओ बनाने की बात बाद में महाराज ! दहीं तैयार है, दूसरा कुछ नही, अच्छा तो दही ही लाईए।

महाराज बोले, जल्दी लाईए । दहीं की मटकी तैयार है। महाराज को ऐसी भूख लगी है। लगता है रह नही सकते है। यह कैसी भूख है। भक्त के भावना की भूख है। दहीं की मटकी पास रखी है। इतने में श्रीजी महाराज प्रतीक्षा न करके विना चम्मच लाये कटोरी लाये सीधे ही हाथ मटकी में डाल दिये।

व्यापकेश मुनि बताते है कि हाथ डाल कर कैसी लीला किये । ये कहते है कि पूर्व अवतार अर्थात् श्री कृष्ण अवतार में भगवान दहीं और मख्खन खाते समय चम्मच का प्रयोग नही करते थे । भागवत में कही ऐसा वर्णित नही है।

यहाँ पर स्वामिनारायण भगवान भी आज इसी प्रकार दही खाने लगे। खाते गेय और प्रशंसा करते गये। दही बहुत अच्छी है। एक मटकी खाली कर दिये । दूसरी भी खाली कर दिये। तीसरी मटकी का आधा भाग खा गये । महाराज इस प्रकार दही खाते हो ये लिला चरित्र कैसा है, सुनते, पढते ऐसा लगता है कि वैज्ञानिक पहले पैदा हुए होते तो विडियो कैमरा होता तो आज हम लोगो को कैसा आनंद प्रदान होता। इस लीला का प्रत्यक्ष दर्शन करते लेकिन ये सभी सौ वर्ष बाद पैदा हुए।

दहीं की मटकी खाली करके श्रीजी महाराज करणीबा से कहते है कि अब भोजन तैयार हो तब तक आराम है । अब कोई बात नही अब भोजन शांति से बनाईए अभी आधे घंटे तक कोई बात नहीं तब तक काफी है।

श्रीजी महाराज करणीबा को निष्कामी, निर्मलमन और पवित्र जानकर कहते है। करणीबा हमारे पैर में तो देखो, क्या चुभ गया है । और करणीबा महाराज के चरणो को देखी तुरन्त हाथ में साधन लेकर काँटा निकालने लगी । महाराज आप के चरणो में कई कांटे चुभे है कितने काँट चुभे है आप को ज्ञात है ? यहाँ पर सत्संगीभूषण में शुद्ध आंकडा (संख्या) लिखी है। अट्ठारह काँटे। ये ऐसे काँटे। कांटा दो तरह से चुभता है ये सबको पता नही चलता है। एक कांटा चुभे और दिखाई दे उसे खीच कर बाहर निकाल देते है । दूसरा काँटा चुभने के बाद अन्दर टूट जाता है। टूटे को नूकीले साधन से निकालतना पडता है । अर्थात् श्रीजी महाराज को अठ्ठार कांटे चुभे और अन्दर ही टूट गये थे । करणीबा काँटा निकालने वाला नुकीला साधन लेकर भगवान के

चरणो में से काँटा निकाली । इतने काँटे चुभने का कारण जूते को उनहोने एक ब्राह्मण को भेट दे दिये ते । नंगे पैर भचाउ से लेकर आधोई आये । इतने अधिक काँटे प्रभु को चुभे किसके कारण ये किसके लिए । भक्त वत्सल भगवान इस प्रकार कृपा करने के लिए गाँव-गाँव विचरण करते थे । यह भक्तो के सुख के लिए

मित्रो, अपने को तो कुछ करना ही नही है । मात्र केवल भगवान का भजन करना है । यदि हम भगवान को भूलेगे नही तो भगवान अपने को भूलते नही है । करणीबा की तरह जीवन में भक्ति निष्ठा प्रेम निष्ठा जो हो तो भगवान सामने से आकर आपकी सेवा स्वीकार करते है । यह बात करणीबा की इस कथा वाचन से सिद्ध होती है ।

•

सभी जगह सद्‌गुण की पूजा होती है

– नारायण वी. जानी (गांधीनगर)

मनुष्य सद्‌गुण से आदर पात्र बनता है । मनुष्य की महानता का माप उसके सद्‌गुण है । एक राज्य में कोषाध्यक्ष की नियुक्ति करना था । इसके लिए योग्य व्यक्ति की खोज के लिए प्रधान मंत्री को सौपा गया । थोडे ही दिनो में होशियार, विशेषज्ञ, प्रमाणिक व्यक्ति का चयन करके राजा के पास लाये ।

राजाने साक्षात्कार लिया । कई प्रकार के घुमावदार प्रस्न पूछकर निरीक्षण किये । वास्त वमें यह व्यक्ति कोषाध्यक्ष पद योग्य था । लेकिन एक कमी सामने से दिखी । दिवान द्वारा चयनित व्यक्ति का चेहरा अच्छा नही था । महाराजने कहा मुझे तो बार-बार कोषाध्यक्ष से मिलना होता है । उसके साथ चर्चा-विचारणा का अवसर आता है । उसका खराब चेहरा मुझे देखना पडेगा । जो मुझे अच्छा नही लगता है । इसलिए इस व्यक्ति पर कल विचार करेगे ।

दूसरे दिन सभा बुलाई गयी । गर्मी का दिन था । अधिक गरमी थी । प्यास लगने पर राजाने पानी माँगा दिवान ने स्वर्ण कलश में से पानी दिया । राजने कहा पानी गर्म है । दूसरा लाये । दिवान आदेश दिया चाँदी के पात्र में पानी लाओ । ये भी पानी गर्मी के कारण गर्म था । राजा गुस्से मे बोले माटीके घडे में से शीतल जल शीघ्र लाओ । दिवान ने कहा महाराज ! ये मिट्टीका घडा सोने-चांदी जैसा सुंदर नही है । इसलिए आपको सोने-चांदी के पात्र में से जल दिया है ।

दिवान के उत्तर से राजा सभी रहस्य को जान गये । असुंदर जिखने वाले मनुष्य के सद्‌गुणो को महत्व को समझकर कोषाध्याक्ष बना दिये ।

मित्रो ! जीवन में सुखी होना हो, चयनित क्षेत्र में प्रगति करना हो तो सद्‌गुण को महत्व देना । इतना ही नही जीवन में सद्‌गुणो को चयानित करे । और ''गुण ग्राही जनार्दन'' इस संस्कृत उक्ति अनुसार अपने इष्टदेव स्वामिनारायण भगवानने सदैव सद्‌गुण और सद्‌गुणी को महत्व दिये है । इस बात को हमेशा याद रखियेगा ।

नीचे के महामंदिरो में नित्य दर्शन के लीये

जेतलपुर : www.jetalpurdarshan.com
महेसाणा : www.mahesanadarshan.org
छपिया : www.chhapaiya.com
टोरडा : www.swaminarayanmandirtorda.com
नारणघाट : www.narayanghat.com
वडनगर : www.swaminarayanmandirvadnagar.com
प्रयाग : www.prayagmilan.org
अयोध्या : www.ayodhyaswaminarayanmandir.com
ईडर : www.gopinathjiidar.com
नारणपुरा : www.sankalpmurti.org
धोलका : www.swaminarayanmandirdholka.co.in

श्री स्वामिनारायण

भक्तिसुधा

(प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी के आशीर्वचन में से)
(एकादशी सत्संग सभा प्रसंग पर कालुपुर मंदिर हवेली) "इन्द्रियो का आहार शुद्ध होगा तो ही हम आन्तरिक कल्याण के योग्य अधिकारी बनेगे"

(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

हम जो आहार खाते है उसका प्रभाव हमारे शरीर पर पडता है। यह कहने की बात नही है यह सबको ज्ञात ही है । जैसा तला पदार्थ खाते है वैसी ही डकार आती है अपना ध्यान भी उसी पर जाता है । विचार करने की शक्ति शरीर कमजोर होने पर कम हो जाती है । उसी प्रकार हम अपने इन्द्रिय को जो आहार देते है उसका अंतकरण पर प्रभाव पडता है। उदाहरण स्वरुप आप का आहार देखना कुछ वस्तुए देखने योग्य नही होती है लेकिन देख लेने के बाद मन विचलित हो जाता है । देखने के बाद मन बार-बार वही जाता है। भगवान का दर्शन करने पर शांति मिलती है । उसी प्रकार कान का आहार ''शब्द'' होता है। कई शब्द हमें वैराग्य पैदा कर देते है। और कई शब्द वियोग में भी आसक्ति ला देते है। जिससे हम सत्संग से दूर हो जाते है । और कुछ शब्द सत्संग की प्रेरणा प्रदान करते है । पहले के समय में साधु-संत-गृहस्थ के घर भिक्षा माँगने जाते थे । एक गाँव में चार-पाँच संत भिक्षा मागने गये । उसमें ''एक साधु कम उम्र वाला एवम् सुंदर था । वह जिस घर में भिक्षा मांगने गया वहाँ पर घर में से बहनो ने भिक्षा दिया लेकिन आपस में बात करने लगी कि ये कितना कम आयुवाला रुपवान ये तो गृहस्थाश्रम के योग्य है लेकिन मुंडन कराके सन्यासी हो गये है ये शब्द उस साधु के कान तक पहुँचे उसके मन में उतार-चढाव का भाव पैदा हो गया। कई वर्षो को त्याग करके संसारी हो गया। कहने की बात यह है शब्द प्रभाव डालता है। उसी प्रकार त्वचा का स्पर्श प्रभाव, कैकेयी अधिक पवित्र और धार्मिक थी । प्रारम्भ में उसने मंथरा की बात नही मानी, लेकिन मंथरा जब स्त्री-चरित्र का आचारण करके रोने लगी तो प्रेम वश होकर मंथरा का स्पर्श किया, मंथरा के अंदर कलियुग प्रधानता थी जिससे स्पर्श से अन्तःकरण पर प्रभाव पडा । संक्षिप्त में कहे तो ''अपने अन्तःकरण रुपीधर में पाँच इंद्रियो का दरवाजा हमेशा ढिला नही रखना चाहिए । हम जब अपना दरवाजा सभी के लिये खोल देगे तो, कुत्ते, बिल्ली प्रवेश करेगे तो क्या होगा । हम प्रत्येक व्यक्ति को अपने घर में प्रवेश नही देते है। सोते समय सब कुछ देख लेते है । उसी प्रकार अपने अन्तःकरण को शुद्ध रखने के लिए पंच इंद्रिय दरवाजा होता है उसे भी बहुत ध्यान देना पडता है । कितना भी अच्छा सत्संगी क्यो ही न हो इंद्रिय आहार शुद्ध न होने पर सत्संग का फल नही प्राप्त करता है। स.गु. श्री गोपालानंद स्वामी के प्रवचन में आता है कि गोबर रोड के उपर भगवान की मूर्ति नही रखी जाती है अर्थात् अपने अंतःकरण में पंच विषय की गंधआती हो वहाँ भगवान नही रहते है। अपने घर में गंधआती हो तो आप भी नही रह सकते है जिसके अन्तःकरण में मलिनता हो वहाँ भगावन नही आते है। मकान बनाने के लिए जैसे नींव मजबूत चाहिए क्योकि मकान का आधार अच्छा न होने के कारण मकान शीघ्र ढह जाता है । उसी प्रकार अंतकरण की शुद्धि के लिए आहार शुद्ध होना चाहिए। आहार खराब होने के कारण सत्संग रुकता नही है । आहार शुद्ध तो अंतःकरण शुद्धि जिससे हम आन्तरिक कल्याण के योग्य बनते है । जैसे मकान का आधार कमजोर होने पर मकान गिर जाता है । उसी प्रकार आहार शुद्ध न होने के कारण बाहर से कुछ बदला नही

दिखाई देता है, लेकिन आध्यात्मिक मार्ग में अवरोधआता है। यह तब पता चलता है जब अपना मन शांत हो जाता है। अन्दर उद्वेग पैदा होता है शरीर कमजोर और दुर्बलता का अनुभव होता है। जब मन शांत हो तो विचार करना चाहिए कि इन्द्रियो को कौन सा भोजन मिल गया है। जिसका प्रभाव पड रहा है। ग.प्रथम पाठ १८ के वचनामृत में महाराजने विस्तृत बात की है कि ''पंच विषय को समझे बिना जो भोग करेगा। तत्व एव तत्वहीन का विचार किये वगैरे यदि वह नारद - शनकादि जैसे होने पर भी उसकी बुद्धि विचलित हो जायेगी। जिसे देह का अभिमान हो और उसकी बुद्धि भ्रष्ट हो जाय तो उसमं क्या कहा जा सकता है। पंच इंद्रियो को अच्छे और खराब का विचार किये बगैर जो प्राप्त करेगा। उसका अन्तःकरण भ्रष्ट हो जायेगा। पंचइन्द्रियो के दारान्याय पूर्वक ग्राहय करने पर अंतःकरण शुद्ध होगा और इससे ईश्वर की अखंड स्मृति बनी रहेगी। इन पाँचो मे से एक भी अशुद्द है तो पूरा आहार मलिन हो जाता है। और अतःकरण भी दूषित हो जाता है। भगवान के भक्त को भगवान के भजन में यदि कोई अवरोधआता है तो उसके मुख्य कारण पंच इंद्रियो का विकार ही है उसमें अन्तःकरण दोषी नही है।

ये जो बात है उसे महाराज ने कितना महत्व दिया है कि महाराज रात्रि का भोर वाला प्रहर अर्थात् प्रातः ४ बजे हरिभक्तो को बुलाकर महाराज ने यह बात कही थी। ''एक बात कहता हुँ सुनिए श्रीजी महाराज बोले मेरे मन में तो ऐसा हो रहा है कि बात न बताउ लेकिन आप लोग हमारे है जान कर कह रहे है जो इन बातो को समझकर व्यवहार करता है वह मुक्त हो जाता है इसके अलावा तो चार वेद, छः शास्त्र एवम् अढारह पुराण भारतीय ईतिहास पढकर तथा उसका अर्थ समझकर सुनकर भी मुक्त नही हो सकते है। और ऐसा भी कहे है ''यह मेरा बचन है आप सभी अच्छे रुप से रहियेगा तो आप मानियेगा हमारी आप ने सेवा की है और सभी को आशीर्वाद देगे और आप से प्रसन्न होगे। और आप हमारा आदेश सफल करते है ये तो भगवान का तीर्थ है यहाँ पर हम सब मिलकर रहेगे यदि ऐसा नही कर पाये तो हानि होगी। भूत तथा ब्रह्मराक्षस आखिर परेशान करेगे और आप हैरान होगे। बताये अुसार जीवन यापन पश्चात् भगवान के धाम के भागी होगे।

इसलिए कोई भी बात अतःकरण में लेना नही चाहिए भक्ति को जो ताकत चाहिए वह अंतःकण की शुद्धि विना नही मिलती है। हमें इसी संसार में रहना है यहाँ बहुत कुछ होता है। सारा संसार भी भाग्यशाली नही है कि सभी को ऐसे महाप्रतापी ''नरनारायणदेव'' मिले। हमें इस संसार में रहना है तो क्या करना होगा ? न देखने योग्य दिखाई दे, न सुने वाला सुन ले उसे तुरंत भूल जाना चाहिए। सत्संग करके महाराजजीने तो इतना ज्ञान दिया ही है। सत्संग में आकर ध्यान देने पर विवेक बढता है। क्या करने से अपना क्या नुकशान होगा उसी याद रखना होगा। जैसे शरीर के लिए भोजन पर ध्यान देते है उसी प्रकार इन्द्रियो के आहार पर ध्यान देना चाहिए। कितने बडे विद्वान हो जाये यदि अन्तःकरण मलिन है तो एक माला फेरने से लाभ नही मिलेगा। मात्र दो माला ही करो भगवान के साथ एकाग्र होकर करे। यदि अंतःकरण शुद्ध होगे तो अधिक फल मिलेगा। इसका विशेष ध्यान रखना होगा कि परमकृपालु श्री नरनारयणदेव के चरणो में यही प्रार्थना आप सभी सत्संगी को वृद्धि प्रदान करे।

•

प्रेमेश्वर श्रीहरि

- सांख्ययोगी कोकिलाबा (सुरेन्द्रनगर)

प्रेम परमात्मा का स्वरुप होता है। जो ईश्वर को निष्काम भाव से प्रेम करता है वही सर्वोत्तम है। वही भगवान हृदयासम होता है। उसी का प्रेम प्रतिक्षण वृद्धि करता है। गंगा की धारा में किसी को रोका नहीं जा सकता है। देश काल इत्यादि अवरोधसे प्रेम कम नही होता है। ऐसे प्रेमी भक्त की इन्द्रियाँ और अंतःकरण की वृत्तियाँ सहजता से ईस्वर का अनुसरण करती है। जिसने सच्चा प्रेम किया उसे परमात्मा की प्राप्ति हुई है। मीरा बाईने प्रेम से पत्थर की मूर्ति से ईश्वर का दर्शन

किया । श्री गोपीनाथजी महाराज की मूर्ति में से भगवानश्री स्वामिनारायण को बुलवा दिया । प्रहलादजीने प्रेम भाव से स्तम्भ में से नृसिंहजी प्रगट हो गये । प्रेम-प्रेम सब कोई कहे प्रेम न जाने कोई ढाई अक्षर प्रेम का पढै सो पंडित होई । ऐसा प्रेममें जब प्रभु बंधते है तो तभी प्रभु भक्त के प्रेम में वधते है । स्वतंत्र परमात्मा भी परतंत्र है । क्योंकि प्रभु की भी भक्त के प्रेम में बाधना पडता है । ऐसे अनन्य प्रेम जब भगवान के साथ होता है तब जीव प्रभु को विना स्मरण किये एक क्षण भी नही रह सकता है । चंद्र को देखे विना एक पल भी चकोर पक्षी के लिए कठिन हो जाता है ।

ज्ञान की पराकाष्ठा अर्थात् ज्ञान । जीवन की पराकाष्ठा अर्थात् मृत्यु हास्य की पराकाष्ठा अर्थात् रुदन और प्रेम की पराकाष्ठा अर्थात ईश्वर । मनुष्य जो ज्ञात है जहाँ पर प्रेम आनंद होता है वहाँ पर परमात्मा का अस्तित्व होता है । प्रेम प्राप्त करने के लिए एक रुपया भी नहीं खर्च करना पडता है । विना पैसे का भी प्रेम लिता है । प्रेम जीवन के आंगन में आया अवसर है । प्रेम जीवन को सुगंधित करने वाला इत्र है । प्रेम आवास है । प्रेम सुवास है । प्रेम संसार है । प्रेम तारणहार है । प्रेम जीवन का नवलखा हार है । प्रेम जीवन में खिला पुष्प है । प्रेम मन को मस्ती में रखता है ।

प्रेम अर्थात् क्या ? ऐसा कोई पूछे तो उसे बताने का मन होता है कि प्रेम की परिभाषा नही, उसको किया जाता है । यदि आप को जीवन प्रेम मय बनाना हो तो जीवन के सभी विषादो को भूल जाये । इसके बिना आनंद मय जीवन नही हो सकता है । अन्ततः प्रेम अर्थात् क्या, हृदय की एक भूमिका, हृदय में उठने वाले भाव तरंग, प्रेम अर्थात् परमात्मा और में एकाकार की अवस्था भी है । प्रभु मिलन तो दूर है लेकिन परमात्मा को प्राप्त करने का एक्सप्रेस वे अर्थात् प्रेम है ।

भगवान श्रीकृष्ण जी कोहमेशा अर्जुन से मिल ने की आदत थी । ये देखकर रुक्मणि जीको खराब लगता था और बार-बार कहती थी ''मैं आप की सेवा में सदैव तत्पर रहती हूँ इसके बाद भी आप अर्जुन के पास हमेशा जाते है ।'' अर्जुन में ऐसा क्या है ? ऐसा बार-बार रुक्मणिजी को याद रहता था । एक दिन भगवान श्रीकृष्ण हमेशा की तरह कृष्ण के पास जाने की तैयारी कर रहे थे । उस दिन यादवो के लिये उनकी उपस्थिति आवश्यक थी इस लिये रुकने का आग्रह किये । इस कारण रुक्मणी तथा अन्य पटरानियों ने भी रुकने का आग्रह किये । रानी ने भी उस दिन कुछ उत्सव रखा था । इसके बावजूद नियमानुसार श्रीकृष्ण अर्जुन के पास गये ही लेकिन हठाग्रह के कारण रुक्मणिजी को भी साथ ले गये । दोनो अर्जुन के पास गये । अर्जुन थककर आ? थे स्नान करके चटाई पर लेटे थे । और द्रौपदी उनके भीगे बालो को सूखा रही थी । अर्जुन थककर नींद में आ गये थे । भगवान कृष्ण को देखकर द्रौपदी उनके लिए आसन हेतु अन्दर चली गयी । इतने में भगवान अर्जुन के पास बैठकर केश सूखा करने लगे । श्रीकृष्णजी रुक्मणि को इशारे से कहे केश सूख गये है कि नही इसकी निश्चितता के लिए बाल तो गाल पर लगाकर देखे । यह देखकर रुक्मणीजी का क्रोधबढने लगा लेकिन भगवान के आदेशाधीन होकर केश को लगाते ही अर्जुन के प्रत्येक केश से कृष्ण-कृष्ण नाद सतत रुक्मणीजीने सुना । इस लिए कृष्ण पर इतना प्रेम है उनका भ्रम दूर हो गया । अर्जुन के परमात्मा के प्रति प्रेम देखकर समझ गई । अर्जुन का प्रेम भगावन के प्रति अगाधथा । इस कारण से भगवान इनके सखा बने । और अर्जुन के प्रेम की पराकाष्ठा थी जो भगवान उनके सारथी बने थे ।

पशु खुटे से बांधी जाता है । पक्षी धोसले से जुडता है । मनुष्य वासना से बंधता है । और भगवान भक्त के प्रेम से बंधते है । परमात्मा हमेशा प्रेम के पास होते है । लेकिन शर्त ये हे कि प्रेम निष्काम होना चाहिए । जिसमें कोई अपेक्षा, आकांक्षा न हो । इसलिए सुखी होना हो तो निष्काम प्रेमी भक्त बने । ऐसे ही प्रेमी भक्त से सर्वावतारी भगवान श्री स्वामिनारायण अनेक प्रकार से प्रेम करते है । उनके मनोरथ को पूर्ण करते है ।

एकबार भगवान श्रीहरि बैलगाडी में बैठकर जा रहे थे । बगल में मुक्तराज पर्वतभाई और उनका छोटा

पुत्र मेघ चलते आ रहे थे । मेघ चलते-चलते रुक गया इसलिए चलती बैलगाडी में चढ़ने का प्रयास किया । इसी समय श्रीजी महाराज उसे परेशान करने के लिए गाडी पर रखे पैर को नीचे धकेल दिया । एकबार फिर गाडी पर पैर रखा । फिर से महाराजजीने हटा दिया इस प्रकार तीन-चार बार भगवान ने किया अन्ततः मेघ गुस्से में आखर दौडकर गाडी चढकर श्रीजी महाराज के चरण के अँगूठे में काट लिया । श्रीजी महाराज मेघ की बाल सुलभ चेष्ठा को देखकर खुब खुश हुए तथा उसे अपने पास बैठाये इस प्रकार श्रीजीमहाराज अपने भक्तो से प्रेम करते थे । कभी माता बनकर, कभी पिता बनकर, कभी सखा बनकर कभी पुत्र बनकर भी श्रीहरि भक्तो को प्रेम करते थे । गढपुर में स.गु. श्री ब्रह्मानंद स्वामी की 'माता' श्रीजी महाराज ही बने थे । स्वामी जब साधु बनने आये तब उनेक माता-पिता लेने आये थे । उस समय उनकी माता लालूबा देवी जीवुबा और लाडुबा के पास पुत्र मोह मे खूब रोयी । लगता था अभी देहत्याग देगी ऐसी दशा उनकी हो गई थी । जीवुबा और लाडुबा ने श्रीजी महराज से कहा कि ! महाराज पुत्र वियोग में लालूबा का देह छूट जायेगा तो ब्रह्ममुनि ''माँ'' बगेर हो जायेगा । तो उन्हे प्रेम कौन करेगा यब बात श्रीजी को ज्ञात हुई तब ब्रह्मानंद बगल में बैठे थे । महाराज प्रेम से ब्रह्मानंद स्वामी में सिर पर हाथ घुमाये और कहा ''इस ब्रह्मानंद स्वामी की ''माँ'' मैं स्वयं हूँ इसलिए लालूबा देवी से कहना जराभी चिंता न करे । उन्हे हर प्रकार का प्रेम मिलेगा । आप निश्चित होकर घर जाये और भजन करे । मात्र ''माँ'' ही नहीं, आज से हम पिता भी है उसके मालिक भी हमी है । भगवान श्रीहरि मात्र भक्तिमाता को ही पुत्र सुख दिये ऐसा नही है । जेतलपुर में गंगाबा, डागंरवा की जतनबुआ इत्यादि अनेक प्रेमी भक्तो को श्रीजी महाराज पुत्र भाव से प्रेम करते थे ।

पर्वतभाई का श्रीजी महाराज के प्रति अटूत प्रेम था । मांगरोल के गोवर्धनभाई श्रीजी महाराज के प्रति निकटता का भाव था । व्यापार करते थे लेकिन हृदय में बराबर श्री स्वामिनारायण भगवान में निष्ठा-विश्वास और प्रेम था । कोई आता दुकान से वस्तु ले जाता और सेठ से कहता पैसा उधार खातो में लिखा ले, गोरघन से सेठ अच्छा कर देते है चोपडे पर लिखते अवश्य थे लेकिन ले जाने वाले नाम के पीछे ''हस्ते स्वामिनारायण'' लिखकर निश्चिंत हो जाते ते । महाराज के मूर्ति के सामने अखंड स्मृति रख देते थे । इस प्रकार गढडा में दादा के दरबार में उपस्थित श्रीजी महाराज को किसी ने कहा कि गोरधन सेठ तो पागल हो गया है वह अपनी सारी सम्पत्ति लुटा रहा है । उसे समझाइए, महाराज बोले क्या हुआ ? ये व्यापार करता है सबको उधार देते है तत्पश्चात खाता - बही में ग्राहक का नाम लिखकर अन्त में स्वामिनारायण लिख देते है । भगवान श्रीहरि बोले, गोरधन सेठ गवाही में हमको रखता है । इस लिए उसका बकाया का एकत्रीकरण हमको ही करनी होगी । सम्प्रदाय का इतिहिास गवाह है कि गोरधन सेठ के आना पैसे का बकाया भी बेकार नही गया । क्योकि अखिल ब्रह्माड में पहले प्रेमी ईश्वर है । इस प्रकार प्रेमेश्वर श्रीहरि की निकटता भक्तो के साथ है ।

अक्षरवास

सापावाडा (ईडर देश) श्री स्वामिनारायण मंदिर के वयोवृद्ध संत स.गु. स्वामी चैतन्यप्रसाददासजी गुरु स.गु. महंत स्वामी माधवप्रसाददासजी ता. २२-२-२०१८ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है ।

श्री स्वामिनारायण मासिक में प्रसिद्ध करने के लिये लेख, समाचार एवं फोटोग्राफ्स ई-मेईल से भेजने के लिए नया एड्रेस

shreeswaminarayan9@gmail.com

सत्संग समाचार

अहमदाबाद मंदिर परमकृपालु श्री नरनारायणदेव का १९६ वाँ उत्सव मनाया

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपासे तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभादेश से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा कालुपुर मंदिर के पू. महंत स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी की प्रेरणा मार्गदर्शन से अ.नि. प.भ. कालीदासभाई लल्लूभाई पटेल, अ.नि. हिराबेन कालीदासभाई पटेल (गुलाबपुरा वर्तमान अहमदाबाद) परिवार के प.भ. घनश्यामभाई कालीदासभाई पटेल, ध.प. सविताबेन घनश्यामभाई पटेल, चि. हरिकृष्णभाई और चि. अंबरीषभाई पटेल के यजमान पद पर श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में सर्वावतारी श्री स्वामिनारायण भगवान को ध्यान में रखकर सज्जित स्वरुप परमकृपालु श्री नरनारायणदेव का १९६ वाँ उत्सव फाल्गुन सुद-३ को भव्य रुप से मनाया गया।

फाल्गुन सुद-३ तारीख १८-२-२०१८ रविवार प्रातः ७ बजे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री के पवित्र हाथो से भरत खंड के राजाधिराज परमकृपालु श्री नरनारायणदेव आदि देवो का षोडशोपचार महाभिषेक वेदोक्त विधिसे जोशपूर्वक सम्पन्न किया गया।

उत्सव के अवसर मे श्री वासुदेव महात्मय, तीन दिन की कथा सम्प्रदाय के मूर्धन्य विद्वान कथाकार पू. संत स.गु. शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी वक्ता पद पर और अ.नि. राधाबाई मनजी गोरसिया, पिताश्री नानजी विश्राम गोरसिया लडके गोपाल नानजी गोरसिया, रवजी नानजी गोरसिया (सुखपर-कच्छ) परिवार के यजमान पद पर सुंदर रुप से सम्पन्न हुआ।

आज के अलौकिक दिन पर समस्त धर्मकुल के संकल्प से निराधार मा-पिता परिवार विहीन अनाथ बच्चो के लिए अपने ही कालुपुर मंदिर के अक्षर भुवन के सामने परिसर में ''आँगन'' के प.पू.अ.सौ. गादिवालाश्री और प.पू.श्री राजा के पवित्र हाथो द्वारा भूमिपूजन मुहूर्त विधीवत रुप से सम्पन्न हुआ।

प्रासंगिक सभा में पाटोत्सव और कथा के यजमान श्री प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री, पू.. लालजी महाराजश्री का पूजन अर्चन तथा आरती लेकर आशीर्वाद प्रदान किये। पू. महंत स्वामी प्रासंगिक उद्‌बोधन करके सभीका आभार व्यक्त किये। सभा में नरनारायणदेव के पूजारी स.गु. ब्र. स्वामी मुकुंदानंदजी द्वारा गाये गये नंद संतो द्वारा रचित कीर्तन सरिता सीडी का समस्त धर्मकुल के पवित्र हाथों द्वारा विमोचन किया गया।

अंत में प.पू. बड़े महाराजश्री आशीर्वाद भेजकर श्री स्वामिनारायण म्यूजियम में आये थे । इसेक पश्चात प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री आशीर्वाद भेजे स्वयं ''आँगन'' में स्वेच्छा से सेवा देने वाले नाम बोलकर धन्यवाद दिये और सबका उत्साह बढ़े ऐसी हँसी भी कर रहे थे। सभा का संचालन स.गु. शा. स्वामी रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर) ने सुंदर रुप से किया। उत्सव के अगले दिन अर्थात् फाल्गुन सुद-२ के यजमान परिवार का सभी भक्तोने श्रीहरि यज्ञ-महापूजा में बैठकर लाभ लिये । श्री नरनारायणदेव के पाटोत्सव का दर्शन करके हजारो हरिभक्त धन्यधन्य हुआ। पूरे उत्सव में पू. हरिचरण स्वामी (कलोल), भंडारी जे.पी. स्वामी, कोठारी जे.के. स्वामी, योगी स्वामी, भक्ति स्वामी, नटु स्वामी आदि संत मंडल और श्री नरनारायणदेव युवक मंडल और भाई-बहनो हरिभक्तो की सेवा प्रेरणारुप ती।

(कोठारी शा. स्वा. नारायणमुनिदास)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में श्री नरनारायणदेव फूलोत्सव जयंती

सर्वावतारी श्रीहरि अपने सम्प्रदाय में ऐस्ये उत्सवो की परम्परा चालू रखे है कि जब तक ब्रह्मांड है अविरत चलता रहें.

फाल्गुन वद-२ तारीख ०३-०३-२०१८ शनिवार को भरत भाग के राजाधिराज श्री नरनारायणदेव जयंती फुलोत्सव श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर प्रसादी चौक में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री के पवित्र करकमलो द्वारा भव्यता से मनाया गया।

हजारो हरिभक्त फूलोत्सव का दर्शन करके धन्य हुए। इस अवसर के यजमान पू. महंत स.गु. शा. स्वामी

हरिकृष्णदासजी की प्रेरणा से मुंबई के अ.नि. प.भ. अनंतराय धोलकिया, गं.स्व. रंजनबेन धोलकिया और उनके चि. सुपुत्रो में डॉ. हिमांशुभाई, श्री ज्ञानेशभाई, श्री प्रशांतभाई और श्री अपूर्वभाई और उनकी बहन हर्षाबेन यजमान बनकर लाभ प्राप्त किये । सम्पूर्ण उत्सव में भंडारी जे.पी. स्वामी, कोठारी जे.के. स्वामी, योगी स्वामी, नटु स्वामी, भक्ति स्वामी इत्यादि संत पार्षद सुंदर सेवा प्रदान किये थे । (को. शा. नारायणमुनि स्वामी)

कालुपुर मंदिर में श्री नरनारायणदेव को रत्न जडति स्वर्ण मुकुट अर्पण समारोह

सर्वोपरि ईष्टदेव श्री स्वामिनारायण भगवान की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से उसी प्रकार पू. स.गु. महंत शा. स्वामी हरिकृष्णदासजी की प्रेरणा से अ.नि. पारेख जशवंतलाल वि., अ.नि. जयाबेन जशंवतलाल पारेख परिवार के श्री चंद्रेशभाई पारेख अ.सौ. भावना चंद्रेश पारेख, चि. विवेक सी. पारेख, प्रियंक विवेक पारेख, मानसी चन्द्रेश पारेख, स्मिता महेन्द्रभाई पारेख, ममता भद्रेशभाई पारेख, फाल्गुनी निलेशभाई पारेख के परिवार तरफ से परमकृपालु श्री नरनारायणदेव को रत्न जड़ित स्वर्ण मुकुट, वस्त्र, छप्पन भोजन आदि ३-३-२०१८ शनिवार के दिन अर्पण विधिकार्यक्रम कालुपुर मंदिर प्रसादी सभा मंडप में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ सानिध्य में पूर्ण हुआ । इस अवसर पर तीर्थ स्थानो से आये संत उपस्थित थे । पूज्य महंत स्वामी ने यजमान परिवार की सेवा की प्रशंसा किये । तत्पश्चात प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने यजमान परिवार की सेवा की बडाई करते हुए आशीर्वाद प्रदान किये थे । पू. महंत स्वामी के सभी संत मंडलने तत्परता से सेवा प्रदान किये थे । (को. शा. नारायणमुनि स्वामी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर जामफलवाडी (रामोल पंचाब्दी महोत्सव पारायण)

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपासे तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभआदेश एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा गांधीनगर-नारायणघाट मंदिर के पू. महंत शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा मार्गदर्शन से श्री स्वामिनारायण मंदिर जामफलवाडी (रामोल) पंचाब्दी महोत्सव के अर्न्तगत श्रीम्द भागवत दशवा स्कन्द रात्रीय पारायण स.गु. शा. स्वामी चैतन्यस्वरुपदासजी (गांधीनगर) वक्ता पद से ता. २५-१-२०१८ से ता. ३०-१-२०१८ के बीच पूर्ण हुई ।

इस प्रसंग के उपलक्ष्य में भव्य पोथीयात्रा श्री कृष्ण जन्मोत्सव, सत्संग डायरा, महापूजा, ठाकोरजीका अभिषेक, अन्नकूट दर्शन, धर्मकुल दर्शन और संतो की वाणी धामधूम पूर्वक पूर्ण हुई . इस अवसर पर अनेक ज्ञात अज्ञात हरिभक्तोने तन, मन और धन से सेवा किया । तीर्थ स्थानो से अनेक संत पधारे थे ।

ता. ३०-१-१८ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के पवित्र हाथो से ठाकोरजी का अभिषेक अन्नकूट आरती विधिपूर्वक की गई । तत्पश्चात सभी संतोने हरिभक्तोने आशीर्वाद देकर खूब खुश हुआ । उत्सव के बीच में व्याख्यान माला में स.गु. शा. स्वामी रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर) ने स्कंद के भापूर्वण शैली में श्रीहरि को सर्वोपरि समझाये है । सभा संचालन की सुंदर सेवा स.गु. कोठारी शा. स्वामी नारायणमुनिदासजी (कालुपुर) और नारायणघाट स.गु. महंत शा. स्वामी दिव्यप्रकाशदासजी किये थे । हजारो मुमुक्षु को देव दर्शन, कथा श्रवण, धर्मकुल दर्शन करके महाप्रसाद ग्रहण किये तथा बड़े भाग्यशाली बने ।

(कोठारी, जामफलवाडी मंदिर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर धरमपुर (भूंडिया) मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपासे तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभआदेश एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से धरमपुर (भूंडिया) गा ाँव के नवीन भव्य श्री स्वामिनारायण मंदिर का निर्माण पू. स.गु. महंत शा. स्वामी पी.पी. स्वामी (गांधीनगर-नारायणघाट) और स्वा. हरिप्रकाशदासजी गुरु अ.नि. स.गु. स्वा. नारायणमुनिदासजी तथा गाँव के हरिभक्तो के साथ सहकार से किया है । मंदिर पूर्ण होते ही ता. ७-२-१८ से ९-२-१८ तक मूर्ति प्रतिष्ठा का सुंदर आयोजन पूर्ण हुआ । इस उत्सव के उपलक्ष में ता. ७-२-१८ से ९-२-१८ तक श्रीमद् भागवत त्रिदिवसीय कथा स.गु. शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी (गांधीनगर) वक्तापद से पूर्ण हुआ । अपने कालुपुर स्वामिनारायण मंदिर के तरफ से भी प.पू. महाराजश्री की आज्ञा से आर्थीक सहयोग किया गया । छोटे-बड़े गाँव के सभी भक्तो ने तन, मन और धन से सेवा किये । ता. ९-२-१८ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ हाथो द्वारा मंदिर में वेदोक्त विधिसे ठाकोरजी की प्रतिष्ठा की गयी । प.पू. महाराजश्री सबा को आशीर्वाद प्रदान किये ।

बहनो को दर्शन आशीर्वाद देने के लिए प.पू.अ.सौ.

गादीवालाश्री आये हुए थे । तीर्थ स्थानोसे संत-महात्मा आये थे । कालुपुर मंदिर के पू. महंत स.गु.शा. स्वामी हरिकृष्णदासजी के शुभ हाथो द्वारा दाताओ का सुंदर सम्मान किया गया । सम्पूर्ण गाँव अलौकिक लाभ लेकर जीवन कृतार्थ किया। (कोठारीश्री, धरमपुर भुंडिया)

प्रसादीभूत श्री स्वामिनारायण मंदिर मोटेरा का २८ वाँ वार्षिकोत्सव उत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपासे तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभआदेश एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से पू. स.गु. महंत शा. पी.पी. स्वामी (गांधीनगर-नारायणघाट) की प्रेरणा मार्गदर्शन से श्रीहरि प्रसादीभूत श्री स्वामिनारायण मंदिर मोटेरा का २८ वाँ वार्षिक उत्सव ता. २०-२-१८ के दिन विधिवत मनाया गया । प.भ. हर्षदभाई डाह्याभाई पटेल परिवार यजमान होकर दीर्ध लाभ लिये । उत्सव के दिन सुबह ध्वजा की नगरयात्रा, ध्वजा पूजन, ठाकोरजीका अभिषेक, संतो की प्रेरक अमृतवाणी आदि कार्यक्रम हुए । श्री नरनारायणदेव युवक-महिला मंडल ने प्रेरणा दायक सेवा दिये । गाँव के सभी हरिभक्तोने लाभ उठाया । पूरे सभा का संचालन स.गु. शा. स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजीने किया। (कोठारीश्री - मोटेरा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर मेहसाना ९ वाँ पाटोत्सव

परब्रह्म परमात्मा ईष्टदेव श्री स्वामिनारायण भगवान की कृपासे तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभआदेश एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा स.गु.पू. महंत शा. स्वा. आत्मप्रकाशदासजी तथा स.गु. पू. शा. पी.पी. स्वामी (जेतलपुर) की प्रेरणा से तथा मेहसाना मदिर के महंत स.गु. शा. स्वामी उत्तमप्रियदासजी तता स.गु. स्वामी नारायणप्रसाददासजी के सुंदर आयोजन से श्री स्वामिनारायण मंदिर मेहसाना का ८ वाँ पाटोत्सव २-२-१८ के दिन विधीवत पूर्ण हुआ ।

उत्सव के उपलक्ष्य में अखंड धून सत्संग सभा, विष्णु यज्ञ आदि धूमधाम से पूर्ण हुआ ।

सुबह ठाकोरजी का सोलह ऋंगार पूजन महाभिषेक विधिवत पूर्ण हुआ । इसके बाद छप्पन भोग अन्नकूट और सत्संग सभी पूर्ण हुई । जिस में संतो द्वारा यजमानश्री प.भ. अश्विनभाई याज्ञिक (सी.ए.) परिवार का सन्मान किया गया । यजमानो द्वारा संतो की पूजा की गई ।

प्रासंगिक सभा में पू. पी.पी. स्वामी तथा तीर्थस्थानो से आये संतो ने आशीर्वाद दिया । जिस में जेतलपुर, कलोल, कालुपुर, अंजली, लालोडा, मूली, सायला, बिलिया, नारणपुरा आदि धामो से संत आये थे ।

अंत में महाविष्णुयज्ञ की पूर्णाहुति पश्चात सभी भक्तोने प्रसाद ग्रहण करके धन्य हुए ।

(हितेन्द्रसिंह राओल - मेहसाना)

श्री स्वामिनारायण मंदिर भाउपुरा दशाब्दी समारोह

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपासे तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभआदेश एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा स.गु.पू. महंत शा. स्वा. आत्मप्रकाशदासजी तथा स.गु. पू. शा. पी.पी. स्वामी के मार्गदर्शन प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर भाउपुरा का दशाब्दी महोत्सव ता. २-२-१८ से ता. ४-२-१८ को विधिवत पूर्ण हुआ .

इस प्रसंग के उपलक्ष्य में ता. २-२-१८ से ४-२-१८ पर्यन्त श्री घनश्याम लीलामृत ग्रंथ की तीन दिन की कथा शा. स्वामी भक्तिनंदासजीने वक्ता पद से समस्त ग्रामवासीओ को कथा का अलौकिक श्रवण एवम् पान कराया था । कथा से पूर्व पहले दिन पोथीयात्रा निकली थी . इसके पश्चात मंगलदीप का प्रज्जवलन मूली मंदिर के ट्रस्टी श्री शा. स्वा. नारायणप्रसाददासजी, स्वामी प्रेमस्वरुपदासजी, राम स्वामी, हरिद्वार के सन्यासी विजयानंद सरस्वतीजी आदिने किया था । शा.स्वा. नारायणस्वरुपदासजी के मंगल प्रवचन के बाद कथा शुरु हुई । कथा में श्री घनश्याम जन्मोत्सव धूमधाम से हुआ । दूसरे दिन ठाकोरजी की नगरयात्रा श्री नरनारायणदेव युवक मंडल के सुंदर आयोजन गाँव की परिक्रमा करके वापस मंदिर आये ।

इस अवसर त्रिदिवसीय महाविष्णु यज्ञ का आयोजन हुआ । बहनो को आशीर्वाद देने के लिए प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री भी आये थे ।

दिनांक ४-२-१८ के दिन सुबह ठाकुरजी का अभिषेक, पूजन आरती प.पू. लालजी महाराजश्री के पवित्र हाथो द्वारा पूर्ण हुआ । धर्मकुल के यमजानो द्वारा धर्मकुल पूजन और संतो की पूजा की गयी । श्री नरनारायणदेव युवक मंडल प.पू. लालजी महाराजश्री के साथ ग्रुप फोटोग्राफी करके जीवन में धन्यता का अनुभव किये ।

पूरे सभा को प.पू. लालजी महारजश्रीने आशीर्वाद दिये । प.पू. शा. पी.पी. स्वामीने भी आशीर्वाद दिया । अनेक धामो से आये संतो में से जेतलपुर, अंजली, मकनसर, कलोल, मेहसाना और जमीयतपुरा से आये थे । पूरे उत्सव का संचालन महंत स्वामी विश्वप्रकाशदासजी (अंजली)

और् शा. स्वा. हरिप्रकाधसाजी (मकनसर) ने किया था । संहिता पाठ में शा. उत्तमप्रिय स्वामी मेहसाना पधारे थे । पूरे उत्सव का मार्गदर्शन व्यवहार कुशल जेतलपुर मंदिर के महंत के.पी. स्वामी का था । युवक मंडल की सेवा प्रेरक रही थी । हजारो भक्तोने प्रसाद ग्रहण करके धन्यता का अनुभव किये । (कोठारीश्री - भाउपुरा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर अंजली ११ वाँ वार्षिकोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपासे तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभआदेश एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा स.गु.पू. महंत शा. स्वा. आत्मप्रकाशदासजी तथा स.गु. पू. शा. पी.पी. स्वामी के मार्गदर्शन प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर अंजलि का ११ वाँ उत्सव ता. २६-१-१८ से ३०-१-१८ तक महंत वी.पी. स्वामी के सुंदर आयोजन से धाम-धूम पूर्वक मनाया गया ।

२६ जनवरी के यजमान अ.नि. जयंतिभाई पटेल (चलोडा) परिवार के पुत्र राजुभाई, हितेशभाई, चिकेशभाई और अरविंदबाई के घर से पोथीयात्रा धुन, भजन, कीर्तन करते अंजलि मंदिर तक आये थे ।

कथा की शुरुआत जेतलपुर धाम के पू. महंत स.गु. शा. स्वा. आत्मप्रकाशदासजी तथा मूली मंदिर के ट्रस्टी स.गु. शा.स्वा. नारायणप्रसाददासजी द्वारा दीप प्रज्जवलन और् मंगल उद्बोधन किया गया । ता. ३०-१-१८ माघ सुद-१४ को ठाकुरजी का षोडशोपचार पूजन अर्चन में यजमान परिवार बैठे थे । तत्पश्चात प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीके शुभ हाथो द्वारा ठाकुरजी का महाभिषेक वेदोक्त रुप से पूर्ण हुआ । बाद में महापूजा पूर्ण हुई । उसके बाद कथा शुरु हुआ । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री संत पार्षद मंडल के साथ सभा में बेठे थे । बहनो की सभा में प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुप गादीवालाश्री का आगमन होने से बहनो का अधिक उत्साह वर्धन हुआ ।

प्रासंगिक सभा में प.पू. महाराजश्री का पूजन अर्चन आरती यजमान परिवार द्वारा पूर्ण हुआ । साथ ही यजमानो का सन्मान प.पू. महाराजश्रीने किया था । संतो का भी पूजन हुआ । आगामी खरमास के निमित और मंदिर के १२ वे और १३ वे पाटोत्सव यजमानो को माला हार पहनाकर सम्मान किया गया । कथा के अन्तर्गत प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुप बड़े गादीवालेश्री भी कता में पधारे थे। यजमानो द्वारा ठाकुरजी के ब्रस्त्र को सुंदर सजाकर श्रीहरिके रुप में अर्पण किये थे । प.पू. महाराजश्रीने कथा पूर्ण होने की आरती किये तथा सभा में आशीर्वाद प्रदान किये ।

इस अवसर पर धामो से बड़ी संख्या में संत आये थे । युवक मंडल, महिला मंडल, तथा कर्मचारियो की सेवा प्रेरक रुप में मिली । माघ सुद-१५ चंद्रग्रहण के कारण मंदिर में हरिभक्तो भाईयो और बहनो ने भजन-कीर्तन, वचनामृत आदि कई हरिभक्तोने किया था ।

पूरे उत्सव में आयोजन में जेतलपुर धाम के व्यवहार कुशल महंत के.पी. स्वामी, परिप्रकाश स्वामी (मकनसर), भानु स्वामी (रतनपर) और विष्णु स्वामी (कालुपुर) इत्यादि ने अच्छी सेवा प्रादन किये थे ।

(कोठारीश्री - अंजली मंदिर)

मोयद (ता. प्रांतिज) नूतन श्री स्वामिनारायण मंदिर मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा

श्रीहरि के अलौकिक चरणो से अंकित प्रसादीभूत प्रांतीज देश के मोयद गाँव में श्री नरनारायणदेव देश के अन्तर्गत नूतन श्री स्वामिनारायण मंदिर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभादेश एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा प्रांतिज मंदिर के महंत स.गु. स्वा. प्राणजीवनदासजी और उनके शिष्य शा. स्वामी गोपालजीवनदासजी अथक सेवा यज्ञ से तथा मोयद गाँव के मुमुक्षुओ के साथ सहकार से निर्मित हुआ . ता. ६-२-१८ से १०-२-१८ तक मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा उत्सर्के अन्तर्गत अनेक उत्सव जैसे कि समस्त धर्मकुल दर्शन- २५० संतो की उपस्थिती और हजारो धार्मिक राजनीतिक महानुभावो की उपस्थिति श्रीमद् भागत पंचान्ह कथा, यज्ञ, प्रदर्शन, चारवेद संहिता का पाठ ठाकुरजी की नगरयात्रा, पोथीयात्रा, अन्नकूट, सांस्कृतिक कार्यक्रम, सर्व रोग निदान केन्द्र रक्तदान कैम्प इत्यादि का सुंदर प्रबन्धकिया गाय था । पूरे उत्सव में महंत स.गु. स्वामी प्राणजीवनदासजी, स.गु. पू. महंत शा.स्वा. पी.पी. स्वामी (गांधीनगर-नारणघाट) का सुंदर मार्गदर्शन तथा मोयद, सापड, सलाल और पीलुदरा गाँव के देश-विदेश के हरिभक्तो के अच्छे सहयोग से वृहद व्यवस्था की गयी थी ।

श्रीमद् भागवत के वक्ता पद पर स.गु. शा. स्वामी रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर) आये थे । इन्होने संगीतयुक्त माहौल में रात्रि में कथा सुनाये समस्त उत्सव में सभा का संचालन शा.स्वा. गोपालजीवनदासजी, महंत शा. स्वा. दिव्यप्रकाशदासजी (नारणघाट) और स.गु. को. शा.स्वा. नारायणमुनिदासजी (कालुपुर) ने सुशोभित किया था । इस अवसर पर दोनो देश के संतो एवम् सांख्ययोगी बाईयोने विशाल संख्या में आकर उत्सव की शोभा बढाये थे ।

ता. १०-२-१८ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री आये थे उनके शुभ हाथो द्वारा ठाकुरजी की मूर्ति प्रतिष्ठा, अन्नकूट आरती, यज्ञ कथा की पूर्णाहुति करके सभा को आशीर्वाद प्रदान किये।

इस अवसर पर राजनीतिक महानुभावो में श्री परेश धानानी (विपक्ष के नेता) श्री गजेन्द्रसिंह परमार विधान सभा सदस्य श्री महेन्द्रसिंह बैराया आदि आये थे । युवक मंडल - महिला मंडल की सेवा प्रेरणादायक थी।

(नवलसिंह भगत - प्रांतिज)

श्री स्वामिनारायण मंदिर वसई (टिंबा) मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपासे तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभआदेश एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा स.गु.पू. महंत शा. स्वा. आत्मप्रकाशदासजी तथा स.गु. पू. शा. पी.पी. स्वामी के मार्गदर्शन एवम् प्रेरणा से सभी गांव के हरिभक्तो के सहयोग से वसई टिंबा में नये मंदिर का सुंदर निर्माण किया गया । (इसके पूर्व श्री हरि समकालीन स.गु. आनंदानंद स्वामीने १७० वर्ष पहले, मंदिर का सुंदर निर्माण किये थे ।) नये श्री स्वामिनारायण मंदिर में नये सिंहासन पर सर्वोपरी श्रीजी महाराज, श्री गणपतिजी, हनुमानजी की प्राण प्रतिष्ठा ता. १९-२-१८ के दिन अच्छे से पूर्ण हुई । जिसके उपलभ्य में तीन दिन का दशम स्कंद पुराण, महाविष्णुयज्ञ, ठाकुरजी की नगरयात्रा, मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा, अन्नकूट, ध्वजा रोहण आदि कार्य उल्लास के साथ पूर्ण हुआ था।

कथा वाचक पद पर स.गु.शा. स्वा. भक्तिनंदानदासजी बैठकर हजारो भक्तो को कथा का रसपान कराया था । समस्त उत्सव का प्रबन्धजेतलपुर के व्यवहारकुशल महंतश्री के.पी. स्वामी और शा. हरिप्रकाश स्वामी (मकनसर)ने किया था।

तारीख १९-२-१८ को अपने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का आगमन होने के कारण संत हरिभक्तो द्वारा भव्य स्वागत किया गया था । सर्व प्रथम मंदिर में ठाकुरजीकी प्राण प्रतिष्ठा की आरती अपने शुभ कर कमलो द्वारा किये यज्ञ की पूर्णाहुति भी किये। सभा में व्यास पीठ की आरती भी किये। यजमान परिवार ने धर्मकुल और संतो की पूजा भी किये उत्सव में सहभागी कार्यकर्ताओ भक्तो का प.पू. महाराजश्रीने सम्मान प्रदान किया। सभा में आशीर्वाद भी प्रदान किये। तीर्थस्थानो से संत भी आये थे। युवक मंडल और महिला मंडल ने ध्यान से सेवा किये ते। तीन दिवसीय अखंड महामंत्र धून में काफी भक्तो ने भाग लिया था। अंत में सभी भक्त प्रसाद ग्रहण करके धन्य हुए।

(के.पी. स्वामी महंतश्री - जेतलपुर)

मूली प्रदेश के सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर कीडी (ता. हलवद) मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा

मूलीधाम निवासी श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभादेश से तथा समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से कई साल पहले श्रीहरि समकालीन नंद संतोने कीडी गाँव में मंदिर बनाये थे। जो जीर्ण हो जाने के कारण अ.नि.स.गु. स्वामी प्रभुजीवनदासजी और उनेक साधु स्वामी भगवतचरणदासजी के अथक परिश्रम एवम् प्रेरणा से कीडी गाँव के भव्य मंदिर का जीर्णोध्धार किया गया।

ता. १९-२-१८ से २१-२-१८ को मूर्ति प्रतिष्ठा के कार्यक्रम में श्रीमद् सत्संगीजीवन मुख्य अंश की कथा शा. स्वा. व्रजवल्लभदासजी और पूजारी त्यागवल्लभदासजी के वक्ता पद से हुई.

ता. २१-२-१८ के दिन श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीके शुभ हाथो से मंदिर में सर्वावतारी श्रीहरि की प्राण प्रतिष्ठा वेदोक्त पद्धति से पूर्ण हुई। उपरोक्त उत्सव में श्रीहरियज्ञ, अन्नकूट, सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि पूर्ण हुआ। सम्पूर्ण उत्व के मार्गदर्शक कोठारी स्वामी कृष्णवल्लभदासजी थे। सभा का संचालन मोरबी मंदिर के महंत स्वामी भक्तिनंदनदासजी ने किया था। तीर्थ स्थानो में से संत और सांख्ययोगी बहने भी आयी थी।

उत्सव की सेवा में श्रीजी स्वामी (हलवद) घनश्याम स्वामी और चेतन स्वामी आये थे। (शैलेन्द्रसिंह झाला)

विदेश सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर ह्युस्टन में मकरसंक्रांति, शाकोत्सव-शिक्षापत्री जंयती

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के शुभ आज्ञा से एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा ह्युस्टन मंदिर के महंत स्वामी दिव्यप्रकाशदासजी की प्रेरणा से अपने हिन्दू श्री स्वामिनारायण मंदिर ह्युस्टन में शनिवार (सप्ताह समाप्ति) मंदिर के सभा गृह में सभी भक्त मिलकर भजन-कीर्तन किये

थे । महंत स्वामीने शाकोत्सव का सुंदर महिमा बताये ठाकुरजी के सामने भव्य शाकोत्सव हुआ । इस अवसर पर डॉ. राजेश और सोनल दलाल, प्रवीण शाह परिवार, प्रेसि. श्री गोविंदभाई पटेल और हसमुखभाई पटेल की सेवा प्राप्त हुई । संतो द्वारा ठाकुरजी का अभिषेक और लोककल्याणकारी मंत्र पढे गये । यजमानो का सत्कार किया गया । सभी लोग शाकोत्सव का प्रसाद लेकर धन्य हुए ।

वसंत पंचमी शिक्षापत्री जयंती

शनिवार विकेन्ड में सायं ५ से ८ बजे के मध्य शिक्षापत्री जयंती जोर से मनाई गई । सभा में संत-हरिभक्तोने शिक्षापत्री का पूजन और अर्चना किये । महंत स्वामीने २१२ श्लोको का उच्चारण संस्कृत में किये तत्पश्चात गुजराती में अनुवाद करके कहे । यजमान परिवार का सत्कार करके भजन-नित्य नियम के बाद सभी ने प्रसाद ग्रहण किया ।

ता. १४,१५-१-१८ शनिवार मकरसंक्राति के दिन अपने मंदिर में मंहत स्वामी और महेन्द्र भगत की हाजिरी में मकर संक्रांति, उत्तरायण को मनाया । सभी संतो-हरिभक्तोने भजन कीर्तन गाये । महंत स्वामी और महेन्द्र भगतने होली पर्व की महिमा बताये । आये मेहमानो और यजमानो को सम्मानित किया गया था । संध्या आरती के पूर्व भगवान का अभिषेक किाय गया था । (प्रवीण शाह)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोनिया

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के शुभ आज्ञा से एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से अपने श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोनीया में १० फरवरी शनिवार शामं ६ से ८ के बीच अपने प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू.अ.सौ. गादीवालेश्री, प.पू. बिन्दुराजा और उनेक चि. सुव्रतकुमार और सौम्यकुमार दर्शन के लिये आये थे । दर्शन करके सभा में प.पू.बड़ेम हाराजश्री विराजमान हुए । सर्व प्रथम यहाँ के मंदिर के महंत स्वामीजीने श्री सौम्यकुमार और श्री सुव्रतकुमार उनके जन्म दिन के अवसर पर हार पहनाकर शुभेच्छा प्रदान किये । प.पू. बड़े महाराजश्रीने सभी हरिभक्तो को आशीर्वाद दिये । तथा दोनो भानजो के लिए सुंदर स्वास्थ्य और दीर्धायु के लिए नरनारायणदेव से प्रार्थना किये थे । यजमानो का सत्कार किया गाय । हमारे कई आई.एस.एस.ओ. चेप्टर के संत आये थे । बहनो के वर्ग में सभी बहनोने प.पू. बड़े गादीवालाश्रीका और पू. बिन्दुराजा का स्वागत और पूजन किये । सभी हरिभक्तोने प.पू. बड़े महाराजश्री की पूजा, दर्शन और आरती उतारकर आशीर्वाद प्राप्त किये ।

यहाँ कोलोनिया मंदिर में शायं १७ फरवीर को महंत स्वामी धर्मस्वरुपदासजी के नेतृत्व में हरिभक्तोने भव्य शाकोत्सव मनाया था । सभा में भजन पश्चात स्वामीने शाकोत्सव की महिमा बताया था । यजमानो ने सन्मान पश्चात सभी भक्तो को शाकोत्सव का प्रसाद खिलाया गया । सभी भक्त दर्शन करके, शाकोत्सव प्राप्त करके धन्यता का अनुभव किये । (प्रविण शाह)

श्री स्वामिनारायण मंदिर पारसीपनी

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के शुभ आज्ञा से एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा यहाँ के मंदिर के महंत शा. स्वा. अभिषेकप्रसादासजी सुंदर मार्गदर्शन अनुसार पारसीपने में मकर संक्रांति, शिक्षापत्री जयंती और महाशिवरात्री का त्योहार धाम-धूम से मनाया गया था । सर्व प्रथम महामंत्र धून, कीर्तन तत्पशाचत महंत स्वामीने अपने त्योहारी की परम्परा का महत्व समझाये थे । अंत में जनमंगल पाठ, श्री हनुमानजी की आरती के बाद सभी लोगो ने महाप्रसाद ग्रहण किया था । (प्रवीण शाह)

श्री स्वामिनारायण मंदिर एलनटाउन (वडतालधाम)

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के शुभ आज्ञा से एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से यहाँ के मंदिर के महंत स्वामी और पार्षद नरेन्द्र भगत की प्रेरणा से अपने एलनटाउन श्री स्वामिनारायण मंदिर में खरमास के पूरे महीने सुबह महामंत्र गाया गया था । १४ जनवरी को विशाल शाकोत्सव, संत-हरिभक्तो के साथ मिलकर मनाया गया । महंत स्वामी ने शाकोत्सव वा महत्व समझाये थे । अंत में ठाकुरजी की आरती तत्पश्चात यजमानो का सन्मान किया गया था । सभी लोग शाकोत्सव का महाप्रसाद लेकर धन्य हुए ।

(अरविंदभाई पटेल - गामडीवाला)

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित ।

फाल्गुन वद-१ श्री नरनारायणदेव जयंती फुलोत्सव अवसर पर ठाकुरजी को केसरिया दृश्य की आरती करते हुए । प.पू. आचार्य महाराजश्री श्री नरनारायणदेव को सुवर्ण, रत्न जडित मुकुट अर्पण करते हुए । प.भ. श्री चंद्रेशभाई पारेख परिवार (मुंबई) और सभा में सुवर्ण मुकुट के यजमान परिवार और फुलोत्सव यजमान प.भ. अनंतरायभाई धोलकिया परिवार (मुंबई) का सम्मान करते हुए । प.पू. आचार्य महाराजश्री (२) बापुनगर एप्रोच मंदिर के २५ वे पाटोत्सव अवसर पर ठाकुरजी का अभिषेक करते एवम् आरती करते हुए पू. महाराजश्री ।

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/2018-2020 issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2020

जहाँ पर सबसे पहले श्रीजीमहाराज संतो हरिभक्तो के साथ रंग खेले ते वे श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर के प्रसादी चौक में श्री नरनारायणदेव जयंती फाल्गुन वद-१ के दिन प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के सानिध्यमें धाम-धूम से फुलोत्सव मनाते हुए हजारो हरिभक्त गण।

Praful Kharsani